अगस्त 2025

मन की बात

खेलो इंडिया

एक भारत श्रेष्ठ भारत

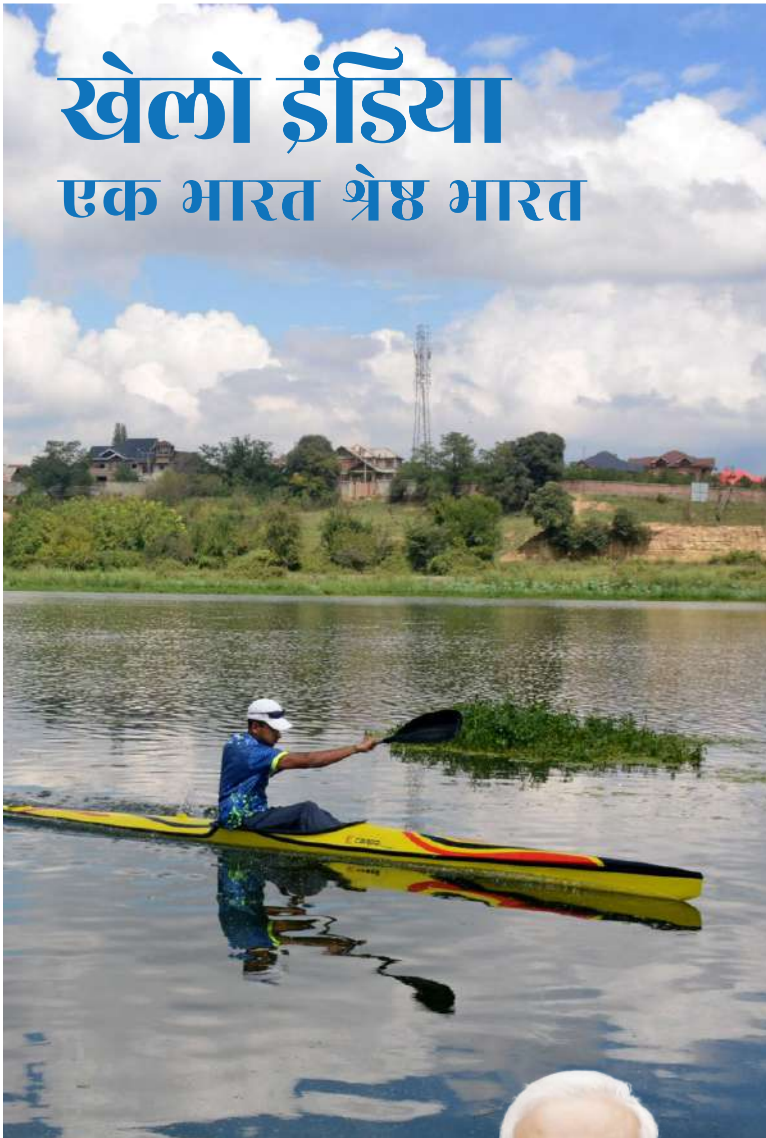

125वां

विशेष संस्करण

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

प्रधानमंत्री का सन्देश

सूची क्रम

मुख्य आलेख

26 **एक भारत, श्रेष्ठ भारत** : जम्मू-कश्मीर में खेल और एकता का उत्सव

40 **शहीदों के गौरव की रक्षा** : जितेंद्र सिंह की कहानी

46 **सोलर दीदी की उज्ज्वल क्रांति** : देवकी देवी का सफर

54 **विश्वकर्मा जयंती** : देश की नींव गढ़ते हाथों को सलाम

58 **विदेश में भारतीय संस्कृति** : प्रतिमाएँ, कहानियाँ और साझी धरोहर

संक्षेप में

34 **खेलो इंडिया वॉटर स्पोर्ट्स फ़ेस्टिवल 2025** : डल झील पर नया सवेरा

44 **पॉडकास्ट से विश्व मंच तक** : भारत की कहानी ने जर्मन कोच को किया प्रेरित

50 **अभियंता दिवस** : सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का स्मरण

लेख

22 **संकट की घड़ी में मदद का हर हाथ अहम है**
-पीयूष आनन्द

30 **जम्मू और कश्मीर केंद्रशासित प्रदेश में खेल जगत के वर्चस्व के एक नए युग की शुरुआत**
-मनोज सिन्हा

36 **प्रतिभा सेतु** : प्रत्येक अभ्यर्थी के सफ़र का सम्मान -डॉ. अजय कुमार

63 प्रतिक्रियाएँ

मेरे प्यारे देशवासियो,
नमस्कार

मॉनसून के इस मौसम में प्राकृतिक आपदाएँ देश की कसौटी कर रही हैं। **पिछले कुछ हफ्तों में हमने बाढ़ और भू-स्खलन का बड़ा कहर देखा है।** कहीं घर उजड़ गए, कहीं खेत डूब गए, परिवार के परिवार उजड़ गए, पानी के तेज बहाव में कहीं पुल बह गए, सड़कें बह गईं, लोगों का जीवन संकट में फंस गया। **इन घटनाओं ने हर हिन्दुस्तानी को दुखी किया है। जिन परिवारों ने अपने प्रियजन खोए, उनका दर्द हम सबका दर्द है। जहाँ भी संकट आया, वहाँ के लोगों को बचाने के लिए हमारे NDRF-SDRF के जवान, अन्य सुरक्षा बल हर कोई दिन-रात जुटे रहे।** जवानों ने तकनीक का सहारा भी लिया है। Thermal कैमरे, Live Detector, Sniffer Dogs और Drone surveillance, ऐसे अनेक आधुनिक संसाधनों के सहारे राहत कार्य में तेजी लाने की भरपूर कोशिश की गई। इस दौरान helicopter से राहत सामग्री पहुँचाई गई, घायलों को airlift किया गया। **आपदा की घड़ी में सेना मददगार बनकर सामने आई। स्थानीय**

लोग, सामाजिक कार्यकर्ता, डॉक्टर, प्रशासन, संकट की इस घड़ी में सभी ने हर सम्भव प्रयास किया। मैं ऐसे हर नागरिक को ह्रदय से धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस कठिन समय में मानवीयता को सबसे ऊपर रखा हुआ है।

मेरे प्यारे देशवासियो, बाढ़ और बारिश की इस तबाही के बीच जम्मू-कश्मीर ने दो बहुत खास उपलब्धियां भी हासिल की हैं। इन पर ज्यादा लोगों का ध्यान नहीं गया, लेकिन जब आप उन उपलब्धियों के बारे में जानेंगे तो आपको बहुत खुशी होगी। **जम्मू-कश्मीर के पुलवामा के एक स्टेडियम में record संख्या में लोग इकट्ठा हुए। यहाँ पुलवामा का पहला day-night cricket match खेला गया।** पहले ये होना असम्भव था, लेकिन अब मेरा देश बदल रहा है। **ये match 'Royal Premier League' का हिस्सा है, जिसमें जम्मू-कश्मीर की अलग-अलग टीमें खेल रही हैं।** इतने सारे लोग, खासकर युवा, पुलवामा में रात के समय, हजारों की तादाद में cricket का आनंद लेते हुए - ये नजारा वाकई देखने लायक था।

साथियो, दूसरा आयोजन जिसने ध्यान खींचा, वो है देश में हुआ पहला 'Khelo India Water Sports Festival' और वो भी श्रीनगर की डल झील पर हुआ। सचमुच, ऐसा उत्सव आयोजित करने के लिए ये कितनी खास जगह है। इसका उद्देश्य है जम्मू-कश्मीर में water sports को और लोकप्रिय बनाना। **इसमें पूरे भारत से 800 से अधिक athletes ने हिस्सा लिया। महिला athletes भी पीछे नहीं रहीं उनकी भागीदारी भी लगभग पुरुषों के बराबर थी।** मैं उन सभी खिलाड़ियों को बधाई देना चाहता हूँ जिन्होंने इसमें

भाग लिया। विशेष बधाई मध्य प्रदेश को, जिसने सबसे ज्यादा मेडल जीते, उसके बाद हरियाणा और ओडिशा का स्थान रहा। जम्मू-कश्मीर की सरकार और वहाँ की जनता की आत्मीयता और मेहमान नवाज़ी की मैं भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ।

साथियो, इस आयोजन से जुड़े अनुभव को आप तक पहुँचाने के लिए **मैंने सोचा है कि ऐसे दो खिलाड़ियों से भी बात करूं, जिन्होंने इसमें हिस्सा लिया, उनमें से एक हैं ओडिशा की रश्मिता साहू और दूसरे हैं श्रीनगर के मोहसिन अली, आइए सुनते हैं वो क्या कहते हैं।**

प्रधानमंत्री : रश्मिता जी, नमस्ते!

रश्मिता : नमस्ते सर।

प्रधानमंत्री : जय जगन्नाथ।

रश्मिता : जय जगन्नाथ सर।

प्रधानमंत्री : रश्मिता जी सबसे पहले तो आपको खेल जगत में सफलता के लिए बहुत-बहुत बधाई।

रश्मिता : Thank You Sir।

प्रधानमंत्री : रश्मिता, हमारे श्रोता आपके बारे में और आपकी खेल यात्रा के बारे में जानने के लिए बहुत उत्सुक हैं, मैं भी बहुत उत्सुक हूँ, बताइए!

रश्मिता : सर मैं रश्मिता साहू हूँ। ओडिशा से। और मैं canoeing player हूँ। मैं 2017 से sports join किया था। canoeing शुरू किया था और मैं National level में, National Championship और National Games में participate किया हूँ। मेरा 41 medals है। 13 Gold, 14 Silver और 14 Bronze Medals, सर।

प्रधानमंत्री : इस खेल की रुचि कैसे बनी? सबसे पहले किसने आपको इस तरफ प्रेरित किया? आपके परिवार में खेल का वातावरण है क्या?

रश्मिता : नहीं सर। मैं जिस गाँव से आती हूँ उसमें खेल का कोई ये नहीं था, तो इधर नदी में boating हो रहा था, तो मैं ऐसे swimming के लिए गया था, तो ऐसे मैं और मेरा दोस्त लोग ऐसे swimming कर रहा था तो एक boat गया है canoeing- kayaking का तो मेरे को उसके बारे में कुछ पता नहीं था।

तो मैंने मेरे दोस्त को पूछा कि ये क्या है? तो दोस्त ने बताया कि उधर जगतपुर में SAI Sports Centre है उसमें खेल का होता है उसमें मैं भी जाने वाली हूँ। मेरे को बहुत interesting लगा। तो ये क्या है मुझे पता भी नहीं था ये तो पानी में बच्चे लोग कैसे करते हैं? Boating करते हैं? मैं उसको बोला कि मुझे भी जाना है। कैसे-कैसे जाना है? मुझे भी बताओ? तो उधर जाके बात करो बोला है। फिर मैं तुरंत घर में जाके पापा मेरे को जाना है, पापा मेरे को जाना है। फिर पापा लोग ठीक है लेके आया। उस time trial तो नहीं था फिर coach लोग ने बोला कि trial February में होता है, February, March में आप उस time trial के time में आ जाओ। फिर मैं trial के time में आया।

प्रधानमंत्री : अच्छा रश्मिता, कश्मीर में हुए 'Khelo India Water Sports Festival' में आपका स्वयं का अनुभव कैसा रहा? पहली बार कश्मीर गई थीं?

रश्मिता : हाँ सर, मैं पहली बार कश्मीर गई थी। हम लोगों को उधर Khelo India, First 'Khelo India Water Sports Festival' आयोजित किया गया था। उसमें मेरा दो Event था। Singles 200 meter और 500 meter doubles में। और मैं दोनों में gold medal हासिल किया हूँ सर।

प्रधानमंत्री : अरे वाह ! दोनों में लाई हो।

रश्मिता : yes sir

प्रधानमंत्री : बहुत-बहुत बधाई।

रश्मिता : thank you sir

प्रधानमंत्री : अच्छा रश्मिता Water Sports के अलावा आपकी क्या hobbies हैं?

रश्मिता : सर water sports के अलावा सर मेरे को sports में मेरे को running बहुत अच्छा लगता है। जब भी मैं छुट्टी में जाती हूँ तब मैं running के लिए जाती हूँ मेरा जो पुराना field है उधर मैं पहले थोड़ा-सा football खेलना सीखी थी तो उधर जब भी जाती थी मैं बहुत running करती हूँ और मैं football भी खेलती हूँ सर, थोड़ा बहुत।

प्रधानमंत्री : मतलब खेल आपके रगों में है।

रश्मिता : हाँ सर, मैं जब 1st class से 10th class तक जब school में था तो मैं जो भी participate करता था

उसमें सब में 1st होता था champion होता था सर।

प्रधानमंत्री : रश्मिता जो लोग आपकी तरह खेलों में आगे बढ़ना चाहते हैं, अगर उनको कोई संदेश देना है तो आप क्या दोगी?

रश्मिता : सर बहुत सारे बच्चे, उनको घर से निकलना भी मना होता है और लड़की हो बाहर में कैसे जाओगे और किसी-किसी का पैसा का दिक्कत के वजह से वो लोग खेल छोड़ रहे हैं और ये जो Khelo India का scheme हो रहा है उसमें बहुत सारे बच्चों को पैसा का भी मदद मिलता है और बहुत सारे बच्चों को बहुत सारे help मिल रहा है, उसकी वजह से बहुत सारे बच्चे आगे जा पा रहे हैं। और मैं बोलूँगी सबसे कि खेल को छोड़ो मत, खेल से बहुत आगे जा सकते हैं। तो खेल तो एक खेल है लेकिन उसमें शरीर का हर अंग स्वस्थ भी रहता है और खेल को आगे लेके India को medal दिलवाना हमारा कर्तव्य है सर।

प्रधानमंत्री : चलिए रश्मिता जी मुझे बहुत अच्छा लगा आपको फिर से एक बार बहुत-बहुत बधाई और आपके पिताजी को भी मेरी तरफ से प्रणाम कहिएगा क्योंकि उन्होंने इतनी कठिनाइयों के बीच भी एक बेटी को आगे बढ़ने के लिए इतना प्रोत्साहन दिया, मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं। धन्यवाद।

रश्मिता : Thank You Sir

प्रधानमंत्री : जय जगन्नाथ।

रश्मिता : जय जगन्नाथ सर।

प्रधानमंत्री : मोहसिन अली नमस्ते!

मोहसिन अली : नमस्ते सर!

प्रधानमंत्री : मोहसिन जी आपको बहुत-बहुत बधाई और आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

मोहसिन अली : Thank you sir

प्रधानमंत्री : मोहसिन आपने पहले Khelo India Water Sports इसका festival और उसमें भी सबसे पहला Gold Medal जीतने वाले आप, आपको कैसा लगा?

मोहसिन अली : Sir, बहुत ही खुश हूँ मैं, मैंने Gold Medal जीता Khelo India में जो पहली बार हुआ है यहाँ पर, कश्मीर में।

प्रधानमंत्री : लोगों में क्या चर्चा है?

मोहसिन अली : बहुत ही चर्चे हैं Sir, पूरी family खुश है जी।

प्रधानमंत्री : आपके स्कूल वाले?

मोहसिन अली : स्कूल वाले भी सब खुश हैं, कश्मीर में सब बोलते हैं आप Gold Medallist हो।

प्रधानमंत्री : तो आप तो अब बड़े celebrity बन गए।

मोहसिन अली : Yes Sir!

प्रधानमंत्री : अच्छा water sports की रुचि कैसे बनी और उसके फायदे क्या नजर आ रहे हैं आपको?

मोहसिन अली : पहले बचपन में मैंने देखा वो boat चलती हुई वहाँ पर डल lake में, पापा ने बोला आप करोगे, हाँ

मुझे भी शौक है, मैं भी फिर गया वहाँ पर centre में madam के पास, फिर madam ने मुझे सिखाया Bilquis mam ने।

प्रधानमंत्री : अच्छा, मोहसिन पूरे देश के लोग आए थे पहली बार water sports का कार्यक्रम हुआ और वो भी श्रीनगर में हुआ, वो भी डल झील में हुआ, इतने सारे देश के लोग आए तो वहाँ के लोगों को क्या feel होता था?

मोहसिन अली : बहुत ही खुशी है सर, सब बोल रहे अच्छी जगह है पूरा अच्छा है यहाँ पर facility सब कुछ अच्छी है। सब यहाँ पर सब कुछ अच्छा रहा 'खेलो इंडिया' में।

प्रधानमंत्री : तो आप कहीं खेलने के लिए कश्मीर के बाहर गए हैं कभी?

मोहसिन अली : Yes Sir, मैं भोपाल गया हूँ, Goa गया हूँ, केरल गया हूँ, हिमाचल गया हूँ।

प्रधानमंत्री : अच्छा तो फिर आप तो पूरा हिंदुस्तान देख लिए हैं।

मोहसिन अली : Yes Sir

प्रधानमंत्री : अच्छा इतने सारे खिलाड़ी वहाँ आए थे

मोहसिन अली : Yes Sir

प्रधानमंत्री : तो नए दोस्त बनाए कि नहीं बनाए।

मोहसिन अली : सर, बहुत दोस्त बना लिए, एक साथ भी घूमे हम यहाँ पर Dal Lake में, Lal Chowk में, पूरी जगह में घूमे हम सर, पहलगाम भी गए थे, yes

sir पूरी जगह।

प्रधानमंत्री : देखिए मैंने तो देखा है कि जम्मू-कश्मीर में sports talent बड़ा गजब का है जी।

मोहसिन अली : Yes Sir

प्रधानमंत्री : हमारे जो जम्मू कश्मीर के नौजवान है वो देश का नाम रोशन करे इतना सामर्थ है उनके अंदर और आपने करके दिखाया है।

मोहसिन अली : Sir, मेरा dream है Olympic में medal जीतना, वही dream है

प्रधानमंत्री : वाह शाबाश

मोहसिन अली : वही dream है Sir

प्रधानमंत्री : देखिए आपसे सुनकर के ही मेरे तो रोंगटे खड़े हो गए।

मोहसिन अली : Sir, वही dream है मेरा Olympic में medal जीतना। देश

के लिए national anthem बजवाना, बस वही dream है मेरा।

प्रधानमंत्री : मेरे देश का एक मजदूर परिवार का बेटा इतने बड़े सपने देखता है मतलब ये देश बहुत आगे बढ़ने वाला है

मोहसिन अली : Sir, बहुत आगे बढ़ने वाला है। हम शुक्रगुजार हैं India Government का जिन्होंने इतना यहाँ पर खेलो इंडिया किया है यहाँ पर पहली बार हुआ है sir.

प्रधानमंत्री : तभी तो तुम्हारा स्कूल में भी जय-जयकार चलता होगा।

मोहसिन अली : Yes Sir.

प्रधानमंत्री : चलिए मोहसिन, मुझे बहुत अच्छा लगा आपसे बात करके और मेरी तरफ से आपके पिताजी को विशेष रूप से मेरा धन्यवाद करना। क्योंकि उन्होंने मजदूरी की जिंदगी जी करके भी आपकी जिंदगी बनाई है और आपने अपने पिताजी के शब्दों पर बिल्कुल आराम किए बिना 10 साल तक तपस्या की है यह खिलाड़ी के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा होती है और आपके coach को भी मैं बहुत बधाई देता हूँ कि जिन्होंने आपके पीछे इतनी मेहनत की, मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ, बहुत-बहुत बधाई भैया।

मोहसिन अली : Thank you sir, Namaskar Sir, Jai Hind!

साथियो, 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना, देश की एकता, देश के विकास के लिए बहुत जरूरी है और निश्चित तौर पर खेल इसमें बड़ी भूमिका निभाते हैं और इसलिए ही तो मैं कहता हूँ जो खेलता है, वो खिलता है। हमारा देश भी जितने tournament खेलेगा, उतना खिलेगा। आप दोनों खिलाड़ियों को आपके साथियों को मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

मेरे प्यारे देशवासियो, आपने UPSC का नाम तो जरूर सुना होगा। ये संस्था देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक Civil Services का exam भी लेती है। **हम सबने Civil Services के Toppers की प्रेरणादायी बातें अनेक बार सुनी हैं।** ये नौजवान कठिन परिस्थितियों में पढ़ाई के बाद अपनी मेहनत से इस service में जगह पाते हैं **– लेकिन साथियो, UPSC की परीक्षा की एक सच्चाई और भी है। हजारों ऐसे उम्मीदवार भी होते हैं, जो बेहद काबिल होते हैं, उनकी मेहनत भी किसी से कम नहीं होती, पर मामूली अंतर से**

सत्यमेव जयते

UPSC

वो अंतिम सूची तक नहीं पहुँच पाते। इन उम्मीदवारों को दूसरी परीक्षाओं के लिए नए सिरे से तैयारी करनी पड़ती है। इसमें उनका समय और पैसा दोनों खर्च होता था। **इसलिए अब ऐसे होनहार विद्यार्थियों के लिए भी एक digital platform बनाया गया है और इसका नाम है 'प्रतिभा सेतु'।**

'प्रतिभा सेतु' में उन उम्मीदवारों **का data रखा गया है, जिन्होंने UPSC की अलग-अलग परीक्षाओं के सभी चरण पास किए, लेकिन, अंतिम Merit list में उनका नाम नहीं आ पाया। इस portal पर दस हजार से ज्यादा ऐसे होनहार युवाओं का databank मौजूद है।** कोई civil services की तैयारी कर रहा था, कोई engineering services में जाना चाहता था, कोई medical services के हर पड़ाव को पार कर चुका था लेकिन final में उसका selection नहीं हुआ – ऐसे सभी उम्मीदवारों की जानकारी अब 'प्रतिभा सेतु' portal पर उपलब्ध कराई जा रही है। **इस portal से private कंपनियां इन होनहार students की जानकारी लेकर उन्हें अपने यहाँ नियुक्ति दे सकती हैं। साथियो, इस प्रयास के नतीजे भी आने लगे हैं।** सैकड़ों उम्मीदवारों को इस portal की मदद से तुरंत नौकरी मिली है और वो युवा जो मामूली अंतर से रुक गए थे, अब नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज पूरी दुनिया का ध्यान भारत की तरफ है। भारत में छिपी सम्भावनाओं पर दुनिया-भर की नजर है। इसी से जुड़ा एक सुखद अनुभव मैं आपसे साझा करना चाहता हूँ। **आपको पता है कि आजकल podcast का बहुत fashion है।** विभिन्न विषयों से जुड़े podcast को भांति-भांति के

लोग देखते और सुनते हैं। **बीते दिनों मैं भी कुछ podcast में शामिल हुआ था। ऐसा ही एक podcast दुनिया के बहुत famous Podcaster Lex Fridman के साथ हुआ था।** उस podcast में बहुत सारी बातें हुईं और दुनिया-भर के लोगों ने उसे सुना भी और **जब podcast पर बात हो रही, तो बातों-बातों में ऐसे ही मैंने एक विषय उठाया था। जर्मनी के एक खिलाड़ी ने उस podcast को सुना और उसका ध्यान मैंने उसमें जो बात बताई थी उस पर केंद्रित हो गया। उन्होंने उस topic से इतना connect किया** कि पहले उन्होंने उस topic पर research की, और फिर जर्मनी में भारतीय दूतावास से संपर्क किया **और उन्होंने चिट्ठी लिखकर बताया कि वो उस विषय को लेकर भारत से जुड़ना चाहते हैं।** आप सोच रहे होंगे कि मोदी जी ने podcast में ऐसा कैसा विषय कह दिया – जो जर्मनी के एक खिलाड़ी को प्रेरित कर गया, ये कौन-सा विषय था – मैं आपको याद कराता हूँ, **मैंने podcast में बातों-बातों में मध्य प्रदेश के शहडोल के football के craze से जुड़ा एक गाँव का वर्णन किया था।** दरअसल दो साल पहले मैं शहडोल गया था, वहाँ के football players से मिला था। **podcast के दौरान एक सवाल के उत्तर में मैंने शहडोल के football खिलाड़ियों का भी जिक्र किया था। यही बात जर्मनी के football खिलाड़ी और Coach Dietmar Beiersdorfer ने भी सुनी। शहडोल के युवा football खिलाड़ियों की life journey ने उन्हें बहुत प्रभावित और प्रेरित किया।** सही

में किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि वहाँ के प्रतिभाशाली football खिलाड़ी दूसरे देशों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेंगे। **अब जर्मनी के इस coach ने शहडोल के कुछ खिलाड़ियों को जर्मनी की एक academy में training देने की पेशकश की है। इसके बाद मध्य प्रदेश की सरकार ने भी उनसे संपर्क किया है।** जल्द ही शहडोल के हमारे कुछ युवा-साथी training course के लिए जर्मनी जाएँगे। मुझे यह देखकर भी बहुत आनंद आता है कि भारत में football की लोकप्रियता निरंतर बढ़ रही है। मैं football प्रेमियों से आग्रह करता हूँ कि जब समय मिले वे शहडोल जरूर जाएं और वहाँ हो रहे sporting revolution को करीब से देखें।

मेरे प्यारे देशवासियो, सूरत में रहने वाले जितेंद्र सिंह राठौड़ के बारे में जानकर आपको बहुत सुखद एहसास होगा। मन गर्व से भर जाएगा। जितेंद्र सिंह राठौड़ एक security guard हैं और उन्होंने एक ऐसी अद्भुत पहल की है जो हर देशभक्त के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा है। पिछले कुछ वर्षों से वो उन सभी जवानों के बारे में जानकारियां जुटा रहे हैं, जिन्होंने भारत माता की रक्षा में अपने प्राण न्योछावर किए हैं। आज उनके पास प्रथम विश्व युद्ध से लेकर अब तक शहीद हुए हजारों वीर जवानों के बारे में जानकारियां मौजूद हैं। उनके पास शहीदों की हजारों तस्वीरें भी हैं। एक बार एक शहीद के पिता की कही गई बातें उनके हृदय को छू गईं। शहीद के पिता ने कहा था "बेटा गया तो क्या हुआ, वतन तो सलामत है ना!"। इस एक बात ने जितेंद्र सिंह जी के मन में देश-भक्ति का एक अद्भुत जुनून भर दिया। आज वो कई शहीदों के परिवारों के संपर्क में हैं। उन्होंने करीब ढाई हजार शहीदों के माता-पिता के चरणों की मिट्टी भी अपने पास लाकर रखी है। ये सशस्त्र बलों के प्रति उनके गहरे प्रेम और जुड़ाव का जीवंत उदाहरण है। जितेंद्र जी का जीवन हमें देश-भक्ति की वास्तविक सीख देता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, आजकल

हमारे सैनिकों के बलिदानों को याद करते हुए

आपने देखा होगा, अक्सर घर की छतों पर, बड़ी इमारतों पर, सरकारी दफ्तरों में solar panel चमकते हुए दिखाई देते हैं। लोग अब इसके महत्व को समझ रहे हैं और खुले मन से अपना रहे हैं । हमारे देश पर सूर्यदेव की इतनी कृपा है, तो क्यों न उनकी दी हुई उस ऊर्जा का पूरा उपयोग करें।

साथियो, Solar power से किसानों की जिंदगी भी बदल रही है। वही खेत, वही मेहनत, वही किसान, लेकिन अब मेहनत का फल कहीं ज्यादा है। ये बदलाव आ रहा है solar pump से और solar rice mill से। आज देश के कई राज्यों में सैकड़ों solar rice mill लग चुकी हैं। इन solar rice मिलों ने किसानों की आय के साथ ही उनके चेहरे की रौनक भी बढ़ा दी है।

साथियो, बिहार की देवकी जी ने solar pump से गाँव की किस्मत बदल दी है। मुज़फ्फरपुर के रतनपुरा गाँव की रहने वाली देवकी जी को लोग अब प्यार से "Solar दीदी" कहते हैं। देवकी जी, उनका जीवन आसान नहीं था। कम उम्र में शादी हो गई, छोटा सा खेत, चार बच्चों की जिम्मेदारी और भविष्य की कोई साफ

तस्वीर नहीं। लेकिन उनका हौसला कभी टूटा नहीं। वो एक self-help group से जुड़ीं और वहीं उन्हें solar pump के बारे में जानकारी मिली। उन्होंने solar pump के लिए प्रयास शुरू किए और उसमें सफल भी रहीं। Solar दीदी के solar pump ने इसके बाद जैसे गाँव की तस्वीर ही बदल दी। जहाँ पहले कुछ एकड़ में जमीन की सिंचाई हो पाती थी, अब solar दीदी के solar pump से 40 एकड़ से ज्यादा क्षेत्र में पानी पहुँच रहा है। Solar दीदी के इस अभियान में गाँव के दूसरे किसान भी जुड़ गए हैं । उनकी फसलें हरी–भरी होने लगी हैं आमदनी बढ़ने लगी।

भारत रत्न सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को श्रद्धांजलि

साथियो, पहले देवकी जी की जिंदगी चारदीवारी के भीतर सिमटी हुई थी। लेकिन आज वो पूरे आत्मविश्वास से अपना काम कर रही हैं, Solar दीदी बनकर पैसे कमा रहीं हैं और सबसे दिलचस्प बात कि वो क्षेत्र के किसानों से UPI के जरिए payment लेती हैं। अब पूरे गाँव में उन्हें बहुत सम्मान से देखा जाता है। उनकी मेहनत और दूरदर्शिता ने दिखा दिया है कि सौर-ऊर्जा सिर्फ बिजली का साधन नहीं है, बल्कि ये गाँव-गाँव में नई रोशनी लाने वाली एक नई शक्ति भी है।

मेरे प्यारे देशवासियो, 15 सितंबर को भारत के महान engineer मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया जी का जन्मदिन होता है। उस दिन को हम Engineers' Day के रूप में मनाते हैं। Engineer सिर्फ machine नहीं बनाते, वे सपनों को हकीकत में बदल देने वाले कर्मयोगी होते हैं। मैं भारत के हर engineer की सराहना करता हूँ। उन्हें अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

साथियो, सितंबर में ही भगवान विश्वकर्मा की पूजा का पवित्र अवसर भी आने वाला है। 17 सितंबर को विश्वकर्मा जयंती है। ये दिन हमारे उन विश्वकर्मा बंधुओं को भी समर्पित है, जो पारम्परिक शिल्प, कौशल और ज्ञान-विज्ञान को अनवरत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचा रहे हैं। हमारे सुतार, लोहार, सोनार, कुम्हार, मूर्तिकार, बढ़ई- मिस्त्री, हमेशा से भारत की समृद्धि की बुनियाद रहे हैं। **हमारे इन विश्वकर्मा बंधुओ की मदद के लिए ही सरकार ने विश्वकर्मा योजना भी चलाई है।**

साथियो, अब मैं आपको एक audio recording सुनाना चाहता हूँ।

"तो ये जो मानपत्र में आपने लिखा है कि स्टेटों के बारे में मैंने जो कुछ किया या हैदराबाद के बारे में हमारी गवर्नमेंट ने जो कुछ किया, ठीक है किया, लेकिन आप जानते हैं कि ये हैदराबाद का किस्सा इस तरह से है, हमने किया, उसमें कितनी मुश्किल हुई। सब स्टेटों के साथ, सब Princes के साथ हमने वायदा दिया था कि भाई कोई Prince का कोई राजा का हम ग़लत फैसला नहीं करेंगे। सबका एक ही साथ जैसा सबका होता है वैसा उनका भी होगा। लेकिन उनके लिए हमने वहाँ तक अलग समझौता किया।"

साथियो, ये आवाज़ लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की है। हैदराबाद की घटनाओं पर उनके स्वर में जो पीड़ा है, उसे आप महसूस कर सकते हैं। **अगले महीने सितंबर में हम Hyderabad Liberation Day भी मनाएंगे। ये वही महीना है जब हम उन सभी वीरों के साहस को याद करते हैं जिन्होंने 'Operation Polo' में हिस्सा लिया था। आप सबको मालूम है कि जब अगस्त 1947 (Nineteen Forty Seven) में भारत को आज़ादी मिली, तो हैदराबाद अलग ही स्थिति में था। निज़ाम और रज़ाकारों के अत्याचार दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे थे। तिरंगा फहराने या 'वंदे मातरम्' कहने पर भी मौत के घाट उतार दिया जाता था।** महिलाओं और गरीबों पर अत्याचार किए जाते थे। उस समय बाबा साहेब आंबेडकर ने भी चेतावनी दी थी कि ये समस्या बहुत बड़ी बनती जा रही है। **आखिरकार, सरदार पटेल ने मामले को अपने हाथ में लिया। उन्होंने सरकार को 'Operation Polo' शुरू करने के लिए तैयार किया। रिकॉर्ड समय में हमारी सेनाओं ने हैदराबाद को निज़ाम की तानाशाही से आज़ाद कराया और उसे भारत का हिस्सा बनाया।** पूरे देश ने इस सफलता का उत्सव मनाया।

मेरे प्यारे देशवासियो, आप दुनिया के किसी भी कोने में चले जाएं, वहाँ आपको भारतीय संस्कृति का प्रभाव देखने को जरूर मिलेगा और ये प्रभाव केवल दुनिया के बड़े शहरों तक सीमित नहीं है बल्कि इसे छोटे-छोटे शहरों में भी देखा जा सकता है। **इटली के एक छोटे से शहर कैम्प-रोतोंदो में ऐसा ही देखने को मिला है। यहाँ महर्षि वाल्मीकि जी की प्रतिमा का अनावरण किया गया।** इस कार्यक्रम में वहाँ के स्थानीय मेयर

भारतीय संस्कृति

दुनिया को जोड़ने वाली एक कालातीत विरासत

सहित क्षेत्र के अनेक अहम व्यक्ति भी शामिल हुए। कैम्प-रोतोंदो में रहने वाले भारतीय मूल के लोग महर्षि वाल्मीकि जी की प्रतिमा लगने से बहुत खुश हैं। महर्षि वाल्मीकि के संदेश हम सभी को बहुत प्रेरित करते हैं।

साथियो, इस महीने की शुरुआत में कनाडा के मिसीसागा में प्रभु श्री राम की 51 फीट ऊँची प्रतिमा का भी अनावरण किया गया है। इस आयोजन को लेकर लोगों में बहुत उत्साह था। social media पर प्रभु श्रीराम की भव्य प्रतिमा के Videos खूब share किए गए।

साथियो, रामायण और भारतीय संस्कृति के प्रति ये प्रेम अब दुनिया के हर कोने में पहुँच रहा है। रूस में एक मशहूर स्थान है – Vladivostok. बहुत से लोग इसको ऐसी जगह के रूप में जानते हैं, जहाँ सर्दियों में तापमान -20 (minus twenty) से -30 (minus thirty) डिग्री Celsius तक गिर जाता है। **इस महीने Vladivostok में एक अनूठी प्रदर्शनी लगी। इसमें रूसी बच्चों द्वारा रामायण की अलग-अलग Theme पर बनाई गई Paintings को भी showcase किया गया।** यहाँ पर एक competition का भी आयोजन हुआ। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में भारतीय संस्कृति के प्रति बढ़ती जागरुकता देखकर वाकई बहुत प्रसन्नता होती है।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में इस बार इतना ही। इस समय देश-भर में 'गणेश उत्सव' की धूम है। आने वाले दिनों में बहुत सारे त्योहारों की रौनक होगी। इन त्योहारों में आपको स्वदेशी की बात कभी भी भूलनी नहीं है। उपहार वही जो भारत में बना हो, पहनावा वही जो भारत में बुना हो, सजावट वही जो भारत में बने सामान से हो, रौशनी वही जो भारत में बनी झालरों से हो - और भी ऐसा बहुत कुछ, जीवन की हर जरूरत में सब कुछ स्वदेशी हो। गर्व से कहो 'ये स्वदेशी है', गर्व से कहो 'ये स्वदेशी है', गर्व से कहो 'ये स्वदेशी है'। इस भाव को लेकर हमें आगे चलना है। एक ही मंत्र 'Vocal for Local', एक ही रास्ता 'आत्मनिर्भर भारत', एक ही लक्ष्य 'विकसित भारत'।

साथियो, इन खुशियों के बीच आप सभी स्वच्छता पर जोर देते रहें, क्योंकि जहाँ स्वच्छता है वहाँ त्योहारों का आनंद भी और बढ़ जाता है। साथियो, 'मन की बात' के लिए मुझे इसी तरह बड़ी संख्या में अपने संदेश भेजते रहिए। आपका हर सुझाव इस कार्यक्रम के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अपना feedback मुझ तक जरूर पहुँचाते रहें। अगली बार जब हम मिलेंगे तो और भी नए विषयों की चर्चा होगी।

बहुत-बहुत धन्यवाद, नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

पीयूष आनन्द
भारतीय पुलिस सेवा,
महानिदेशक, राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (NDRF)

संकट की घड़ी में मदद का हर हाथ अहम है

राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल यानी एनडीआरएफ़ का गठन 19 जनवरी, 2006 को आपदा प्रतिक्रिया अधिनियम 2005 के तहत एक बहु-कौशल एवं विशेष आपदा प्रतिक्रिया बल के रूप में हुआ था। इसे देश और विदेश में सभी प्राकृतिक एवं मानव-जनित आपदा आने पर तुरंत हरकत में आने का दायित्व सौंपा गया है। अभी इस बल की 16 बटालियन हैं। प्रत्येक बटालियन में 18 विशेष तलाश एवं बचाव दल हैं जो पूरी तरह आत्मनिर्भर हैं और इनमें इंजीनियर, तकनीशियन, इलेक्ट्रीशियन, डॉग स्क्वॉड तथा चिकित्सा/पैरामेडिकल विशेषज्ञ शामिल हैं।

गृह मंत्रालय से जारी एनडीआरएफ़ की मानक संचालन प्रक्रिया अर्थात एसओपी के अनुसार राज्यों के आपदा प्रतिक्रिया से जुड़े प्रधान सचिव, राज्य राहत आयुक्त तथा उपायुक्त/जिलाधिकारी इनकी तैनाती की माँग कर सकते हैं। ये आवेदन स्वीकार करने का अधिकार गृह मंत्रालय, एनडीआरएफ़ के महानिदेशक और एनडीआरएफ़ यूनिट कमांडेंट को है। कई बार एनडीआरएफ़ अपने मूलमंत्र "सेविंग लाइव्ज़ एण्ड बियॉण्ड ... ऑल्वेज़ एण्ड ऐवरीवेयर" का पालन करते हुए, मीडिया चैनलों की सूचनाओं के आधार पर त्वरित कार्रवाई के लिए अपनी टीमें औपचारिक अनुरोध से पहले ही घटनास्थल पर भेज देता है। यही कारण है कि एनडीआरएफ़ के बचावकर्मियों को अक्सर "एंजिल्ज़ इन ऑरेंज" कहा जाता है।

गम्भीर आपदा स्थितियों में "गोल्डन विंडो" के दौरान अधिकतम ज़िन्दगियाँ बचाने के लिए एनडीआरएफ़ ने "अलर्ट टीम्स ऑन व्हील्स" की अवधारणा अपनाई है। इसके तहत, बचावकर्मियों की एक टीम और उपकरणयुक्त वाहन, किसी भी आपदा की सूचना मिलने के 20 मिनट के भीतर हरकत में आने को तैयार रहते हैं। ज़मीनी स्तर पर अपनी कमियों की पहचान करने और उन्हें सुधारने के लिए नियमित रूप से अल्पावधि की सूचना पर अभ्यास (मोबिलाइज़ेशन ड्रिल्स) किए जाते हैं। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल देश में 69 स्थानों पर स्थायी रूप से मौजूद है।

हाल में, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर, पंजाब, तेलंगाना और पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों में बादल फटने, बाढ़, अचानक आई बाढ़ और भूस्खलन जैसी आपदाओं से हुई भारी तबाही में मानव और पशु जीवन का बड़ा नुकसान हुआ। ऐसे हालात में, समय पर जनशक्ति और संसाधनों की तैनाती, मदद का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू

होता है। ज्ञात और अज्ञात परिस्थितियों से निपटने के लिए, राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल हर वर्ष गृह मंत्रालय के सहयोग से राहत आयुक्तों और बल प्रमुखों का वार्षिक सम्मेलन करता है जिसमें आपदा सम्बन्धी परिस्थितियों से जुड़े मुद्दों पर चर्चा करके, समन्वित रणनीति तैयार की जाती है। इस सम्मेलन को माननीय केन्द्रीय गृह मंत्री सम्बोधित करते हैं जिसमें एनडीएमए, गृह मंत्रालय, आईएमडी, सीडब्ल्यूसी, जीआईएस, एनआरएससी आदि जैसी आपदा प्रतिक्रिया से जुड़ी प्रमुख एजेंसियों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहते हैं।

हर साल मानसून से पहले, एनडीआरएफ़ कमांडेंट अपने अधिकार क्षेत्र के राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के राहत आयुक्तों से चर्चा करते हैं। पिछले आपदा अनुभवों और मौसम विभाग के पूर्वानुमान के आधार पर, त्वरित कार्रवाई के लिए एनडीआरएफ़-एसडीआरएफ टीमें सबसे संवेदनशील स्थानों पर पहले ही तैनात कर दी जाती हैं। वर्ष 2025 में राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों के अनुरोध पर, रिकॉर्ड 107 एनडीआरएफ़ टीमों को देशभर में पहले से ही तैनात किया गया। इसके बावजूद, कई बार अप्रत्याशित स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं और राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल की टीमों को विमान से पहुँचाना पड़ता है। यह कार्य, एकीकृत रक्षा स्टाफ (IDS), भारतीय वायुसेना (IAF) और राज्यों के अधीन उपलब्ध नागरिक विमानों के सहयोग से किया जाता है। उत्तराखंड में धराली में अचानक

आई बाढ़ और माणा में हिमस्खलन के दौरान सड़कों पर भारी मलबा आ जाने के कारण टीमों को घटनास्थल तक वायु मार्ग से पहुँचाया गया। कई बार ख़राब मौसम की वजह से हवाई मदद भी सम्भव नहीं हो पाती और ऐसे में बचावकर्मियों को उपकरण अपने कन्धों पर लाद कर, ऊँचे नीचे कठिन भूभाग से होकर पैदल पहुँचना पड़ता है। ऐसा कई बार, हिमाचल प्रदेश के मंडी और कुल्लू, उत्तराखंड के चमोली और उत्तरकाशी, 2023 में सिक्किम में हिमनद फटने और हाल के चटेन (सिक्किम) भूस्खलन के दौरान हुआ। इसके लिए राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल के बचावकर्मियों में उच्च स्तर की शारीरिक और मानसिक फ़िटनेस ज़रूरी है और इसे बनाए रखने के लिए शारीरिक दक्षता परीक्षण (PPT) और वार्षिक वैधता परीक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल के लिए, ज्ञात और अज्ञात दोनों प्रकार की

परिस्थितियों से निपटने में नवीनतम प्रौद्योगिकी का उपयोग अनिवार्य है। एनडीआरएफ़ समस्याओं के समाधान के लिए, डीआरडीओ, इन्मास, और अन्य एजेंसियों का सहयोग लेता है। संचालन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू मलबे के नीचे जीवित पीड़ितों का पता लगाना होता है जिसके लिए एनडीआरएफ़ के पास विक्टिम लोकेशन कैमरे और लाइफ़ डिटेक्टर हैं। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल ने शव खोज में कुत्तों को प्रशिक्षित करने की पहल भी की है जो अत्यन्त उपयोगी साबित होगी। इसी प्रकार बड़े पैमाने पर होने वाली घटनाओं में बचाव कार्यों की प्राथमिकता तय करना ज़रूरी होता है, अतः ज़मीनी आकलन के लिए ड्रोन लिए गए हैं।

मानसून के दौरान इस बल को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें अज्ञात और सुदूर क्षेत्रों में रात के समय काम करना, तेज़ बहाव वाले पानी से गुज़रना (जो बचावकर्मियों के लिए अत्यधिक जोखिमपूर्ण होती है) और विभिन्न कारणों से लोगों का अपने घर छोड़ कर बाहर आने में अनिच्छुक होना शामिल है। पशुधन बचाना भी एक चुनौती है जिसका यह बल करुणापूर्वक सामना करते हुए उचित प्राथमिकता देता है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए निरन्तर प्रशिक्षण, प्रत्येक अभियान के बाद समस्याओं पर विचार-विमर्श करना और अनुसन्धान एवं विकास (R&D) के माध्यम से नियमित रूप से आधुनिकतम उपकरण हासिल करना शामिल है।

राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल, राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल, सशस्त्र बलों, प्रशासन और स्वैच्छिक सेवकों के बीच सहयोग, प्रभावशाली प्रबन्धन के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जहाँ राष्ट्रीय और राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल, प्रभावित लोगों को राहत पहुँचाने में घटना स्थल

पर समन्वय के साथ कार्य करते हैं, वहीं सशस्त्र बलों की व्यापक उपस्थिति से कठिन परिस्थितियों में अतिरिक्त सहयोग मिलता है। स्थानीय प्रशासन, उपायुक्त/ज़िलाधिकारी की अगुआई में, इन्सिडेंट रिस्पॉन्स सिस्टम (IRS) की मदद करता है और आकस्मिक परिस्थितियों के लिए भारी मशीनरी तथा अन्य प्रकार की मदद उपलब्ध कराता है। स्थानीय पुलिस क़ानून और व्यवस्था बनाए रखती है, जबकि स्वैच्छिक सेवक राहत वितरण और विशेष बलों की कार्रवाई में सहयोग देते हैं। इस प्रकार, सभी एजेंसियों के संयुक्त प्रयास, आपदाओं में प्रभावी और सतत सहायता में सहायक होते हैं। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल मौसम, नदियों और बाँधों/जलाशयों की स्थिति तथा भूस्खलन सम्बन्धी नवीनतम जानकारी के लिए मौसम विभाग, सीडब्लुसी और जीएसआई से समन्वय बनाए रखता है ताकि उभरती स्थिति को समझते हुए पूर्व-निवारक उपाय किए जा सकें।

आपदाओं से निपटने में स्थानीय समुदाय हमेशा सबसे पहला मददगार होता है। अतः उन्हें ऐसी परिस्थितियों के वास्ते तैयार करने और प्रभावी ढंग से मदद देने में सक्षम बनाने के लिए, राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल नियमित रूप से सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम और स्कूल सुरक्षा कार्यक्रम आयोजित करता है ताकि उन्हें बताया जा सके कि वे आपदा के दौरान क्या करें और क्या न करें। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल ने 25 प्रकार के आपदा मॉड्यूल्स की सामग्री विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में तैयार करके अपने यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध करवाई है जिससे हर कोई लाभ उठा सकता है।

संक्षेप में, यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि यद्यपि राष्ट्रीय आपदा प्रबन्ध बल, राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल

और सशस्त्र बल हमेशा आपदाओं में तुरन्त मदद के लिए उपलब्ध रहते हैं, पर फिर भी वे हर जगह मौजूद नहीं हो सकते। ऐसी स्थिति में नागरिकों की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाती है – अपने को सुरक्षित रखना, अपने पड़ोसियों की मदद करना और राहत कार्यों में सेवा के लिए स्वेच्छा से उपलब्ध रहना।

इस सब के लिए परिवार की आपदा प्रतिक्रिया योजना तैयार करना, आपातकालीन किट बनाना, त्वरित सहायता के लिए सीपीआर और प्राथमिक चिकित्सा जैसे कौशल सीखना, अभ्यासों (ड्रिल्स) में भाग लेना, मीडिया और सचेत ऐप के माध्यम से सम्भावित ख़तरों की ताजा जानकारी रखना, सूचनाएँ साझा करना और समुदाय की यथासम्भव मदद करना आवश्यक है।

याद रखने योग्य सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आपदा के समय हर हाथ मायने रखता है और मिलकर हम अपने देश को आपदा-रोधी समाज बना सकते हैं।

एक भारत, श्रेष्ठ भारत

जम्मू-कश्मीर में खेल और एकता का उत्सव

अपने मनोरम परिदृश्यों और जीवंत परम्पराओं के साथ, जम्मू-कश्मीर खेलों के माध्यम से विकास का एक नया अध्याय शुरू कर रहा है। गुलमर्ग में 'खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025' से लेकर पुलवामा में दूधिया रोशनी में क्रिकेट और डल झील पर जीवंत 'खेलो इंडिया वाटर स्पोर्ट्स फेस्टिवल 2025' तक, खेल एक एकीकृत शक्ति के रूप में उभरे हैं, जो पूरे केंद्र शासित प्रदेश में समृद्धि को बढ़ावा दे रहे हैं और लोगों में एकजुटता की भावना का संचार कर रहे हैं।

खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025 : हिमालय में एक शीतकालीन उत्सव

इस साल की शुरुआत खेलो इंडिया विंटर गेम्स (KIWG) 2025 के साथ हुई, जिसने जम्मू-कश्मीर के बर्फीले परिदृश्यों की ओर दुनिया का ध्यान खींचा है। दो चरणों में आयोजित, पहले लद्दाख (23-27 जनवरी) और फिर जम्मू-कश्मीर (9-12 मार्च) में, इस आयोजन में छह शीतकालीन खेलों की 19 टीमों के 400 से ज्यादा एथलीटों ने हिस्सा लिया।

शीतकालीन खेल न केवल एथलेटिक उत्कृष्टता के बारे में थे, बल्कि स्थानीय

संस्कृति, विरासत और पर्यटन का जश्न मनाने के लिए भी थे।

रॉयल प्रीमियर लीग: पुलवामा में बदलाव का प्रतीक

पुलवामा, जो कभी मुश्किलों का पर्याय रहा था, एक उल्लेखनीय बदलाव का केंद्र बन गया है। इतिहास में पहली बार, इस क्षेत्र ने रॉयल प्रीमियर लीग (RPL) की मेज़बानी की, जो फ्लडलाइट्स में आयोजित एक क्रिकेट टूर्नामेंट है, जिसमें जम्मू-कश्मीर की 12 टीमें शामिल हैं।

यह टूर्नामेंट सिर्फ़ खेल तमाशा नहीं है; यह शांति और प्रगति का प्रतीक है। फ्लडलाइट्स में क्रिकेट की दुनिया में अपनी पहचान बनाने के लिए दौड़ते युवाओं का यह नज़ारा आकांक्षा, प्रतिभा और एकता की ओर एक गहरे बदलाव को दर्शाता है।

खेलो इंडिया वाटर स्पोर्ट्स फेस्टिवल 2025 : डल झील एक अखाड़े में तब्दील

जम्मू-कश्मीर की खेल संस्कृति में एक नया अध्याय जोड़ते हुए, खेलो इंडिया वाटर स्पोर्ट्स फेस्टिवल (KIWSF) 2025, 21-23 अगस्त तक श्रीनगर की प्रतिष्ठित डल झील में आयोजित किया गया। इस जीवंत आयोजन में पाँच रोमांचक जल क्रीड़ाएँ शामिल थीं - रोइंग, कैनोइंग और कयाकिंग, वाटर स्कीइंग, शिकारा रेस और ड्रैगन बोट रेस।

पहली बार, 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने एक ओपन-एज कैटेगरी मीट में भाग लिया, जिससे डल झील एक भव्य खेल अखाड़े में तब्दील हो गई। प्रतियोगिता से परे, KIWSF ने कश्मीर की समृद्ध संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता का प्रदर्शन किया, जिससे स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा मिला और आर्थिक अवसर पैदा हुए। यह युवा शक्ति, सांस्कृतिक गौरव और विकास के एक साधन के रूप में खेलों की सम्भावनाओं का उत्सव था।

नींव का निर्माण- 100 खेलो इंडिया केंद्र

इन खेल आयोजनों के पीछे एक मज़बूत नींव छिपी है। 2015 में, भारत सरकार ने जम्मू-कश्मीर में खेल अवसंरचना के विकास पर विशेष ध्यान देते हुए 200 करोड़ के विशेष पैकेज को मंजूरी दी थी। श्रीनगर और जम्मू के स्टेडियमों का नवीनीकरण, उन्नयन और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं की

मेज़बानी के लिए उन्हें सुसज्जित किया गया।

आज, जम्मू-कश्मीर में 100 खेलो इंडिया केंद्रों के माध्यम से, स्थानीय प्रतिभाओं को निखारा जा रहा है, कोच अगली पीढ़ी का मार्गदर्शन कर रहे हैं और आधुनिक सुविधाएँ युवा एथलीटों को पंख दे रही हैं। यह सुनियोजित निवेश सुनिश्चित करता है कि खेल भावना केवल आयोजनों तक ही सीमित न रहे, बल्कि क्षेत्र के युवाओं के लिए जीवन जीने का एक तरीका बन जाए।

एकता और परिवर्तन की राह के रूप में खेल

ये खेल आयोजन लोगों को एकजुट करके, अवसर पैदा करके और इस क्षेत्र को प्रतिभा और पर्यटन के केंद्र के रूप में प्रस्तुत करके जम्मू-कश्मीर के लिए एक नए युग की शुरुआत का प्रतिनिधित्व करते हैं।

एक ऐसी जगह पर जहाँ कभी चुनौतियाँ कहानी को आकार देती थीं, खेल अब एकता और आकांक्षा की भाषा बन गए हैं। जम्मू-कश्मीर में खेल केवल खेल नहीं हैं, बल्कि एकता के सेतु, समृद्धि के वाहक और आशा की किरण हैं।

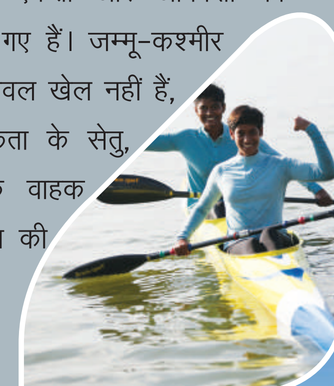

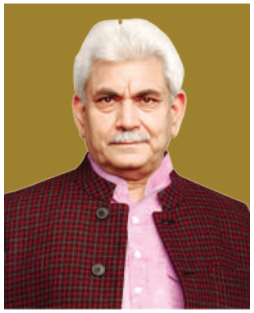

मनोज सिन्हा
उपराज्यपाल,
जम्मू और कश्मीर

जम्मू और कश्मीर केंद्रशासित प्रदेश में खेल जगत के वर्चस्व के एक नए युग की शुरुआत

खेल गति का एक स्वर-संगीत है। यह साहस की एक लय है, जहाँ दिल की धड़कनें आपस में गुंथी होती हैं। यह खिलाड़ियों को ऐसे क्षणों को जीने और खेल के मैदान में सितारों के साथ कदमताल मिलाने का अवसर देता है। 25 अगस्त को, पुलवामा रॉयल प्रीमियर लीग 2025 के तहत डे-नाइट क्रिकेट मैच के दौरान पसीने और सपनों के इस भव्य ऑर्केस्ट्रा का गवाह बना। कश्मीर घाटी के विभिन्न जिलों से आए हजारों दर्शकों की गर्जना हर क्रिकेट शॉट और हर गेंद पर तरंग की तरह गूंज रही थी। हर कोई अपनी आँखों के सामने बन रहे इतिहास का एक साथ स्वागत कर रहा था। यह कश्मीर घाटी के लिए एक नए खेल युग की शुरुआत थी।

रॉयल प्रीमियर लीग के साथ, पुलवामा ने एक नया अध्याय शुरू किया और आशा, शांति, प्रगति और समृद्धि का एक नया अध्याय लिखा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पिछले कुछ वर्षों में हमने जो हासिल किया है, उस पर मुझे वास्तव में गर्व है। यह बदलाव युवाओं के नए सपनों और आकांक्षाओं के साथ-साथ एक शांतिपूर्ण एवं समृद्ध केंद्रशासित प्रदेश की परिकल्पना को दर्शाता है। 2020 से, हमारा प्रयास जम्मू और कश्मीर को एक खेल महाशक्ति बनाना और खेल के एक स्थायी इकोसिस्टम का निर्माण करना रहा है। 'बैक टू विलेज' और अन्य सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से, प्रशासन ने खेलों में एक मजबूत सांस्कृतिक मूल्य स्थापित करने, एथलीटों के

लिए सामाजिक समर्थन सुनिश्चित करने और भागीदारी को बढ़ावा देने का प्रयास किया है।

इन आयोजनों का विचार हमारे सामूहिक विश्वास से उपजा है कि जम्मू और कश्मीर के युवा अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए सर्वोत्तम मंच के हकदार हैं। पिछले 5 वर्षों से जम्मू और कश्मीर रात में भी खेल गतिविधियों का केंद्र बन गया है। जम्मू और कश्मीर खेल परिषद ने पूरे केंद्रशासित प्रदेश में 60 स्टेडियम स्थापित किए हैं, जहाँ ऐसी गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, चाहे वह सोपोर, बारामूला, शोपियां, कठुआ, श्रीनगर आदि हों। उच्च-गुणवत्ता वाली प्रशिक्षण सुविधाओं और उपकरणों ने ग्रामीण स्तर पर खिलाड़ियों को शीर्ष-स्तरीय संसाधन सुनिश्चित किए हैं। प्रतिभाओं की खोज और उन्हें निखारने की सुव्यवस्थित प्रणालियों ने हमें विशिष्ट कोचिंग प्रदान करने और राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के टूर्नामेंट आयोजित करने में मदद की। पिछले आयोजनों के उत्कृष्ट उदाहरणों में लीजेंड्स लीग क्रिकेट शामिल है, जिसने हजारों बच्चों को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटरों को देखने के लिए इकट्ठा किया और हाल ही में अगस्त 2025 में आयोजित फुटबॉल में कश्मीर सुपर लीग में रिकॉर्ड 25,000 युवा शामिल हुए और ऑनलाइन दर्शकों की पहुँच 19 लाख थी।

पुलवामा अपनी जीवंतता और लचीलेपन के लिए जाना जाता है। इसे पहले डे-नाइट क्रिकेट मैच के लिए चुना गया ताकि एक सशक्त संदेश दिया जा सके कि अब जम्मू और कश्मीर के हर कोने में अवसरों की चकाचौंध चमक रही है। पहलगाम घटना के बाद, जम्मू और कश्मीर को खेल पर्यटन और ऐसी गतिविधियों में बच्चों की

भागीदारी के लिए एक सुरक्षित गंतव्य के रूप में प्रदर्शित करना महत्वपूर्ण था। इसी प्रकार, डल झील यानी हमारा मुकुट रत्न और शाश्वत सुंदरता का प्रतीक, खेलो इंडिया वाटर स्पोर्ट्स फेस्टिवल का मंच बन गया। इसने देश और दुनिया को संकेत दिया कि जम्मू और कश्मीर अंतरराष्ट्रीय स्तर के आयोजनों की मेज़बानी के लिए तैयार है।

इन उपलब्धियों के पीछे 'सरकार का समग्र दृष्टिकोण' छिपा है। विभिन्न विभागों और एजेंसियों ने सुरक्षा चुनौतियों का समाधान करने, शांति स्थापित करने और बुनियादी ढाँचे की कमियों को दूर करने के लिए पारम्परिक सीमाओं को तोड़ते हुए मिलकर काम किया है। जम्मू और कश्मीर खेल परिषद ने शांति के इस माहौल का सावधानीपूर्वक लाभ उठाया है। बुनियादी ढाँचे को उन्नत करने से लेकर प्रतिभाओं की खोज तक, स्कूलों और कॉलेजों को शामिल करने से लेकर स्वयंसेवकों को संगठित करने तक, उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इन पहलों की सफलता स्थानीय समुदायों की भी है। माता-पिता, शिक्षक और युवा नेतृत्व इन आयोजनों को सम्भव बनाने के लिए एकजुट हुए। सरकारी संस्थानों और समाज के बीच यह साझेदारी हमारी खेल संस्कृति की असली ताकत है।

जम्मू और कश्मीर केंद्रशासित प्रदेश में, महिला एथलीटों ने दूर-दराज के इलाकों में भी प्रगतिशील खेल संस्कृति को मुख्य रूप से आकार दिया है। उन्होंने रूढ़िवादिता को तोड़ा है। उनकी सफलता जमीनी स्तर पर जुड़ाव और समावेशिता व समानता के मूल्यों को बढ़ावा दे रही है। उनका हर पदक, उनका हर मैच, इस बात का प्रमाण है कि जम्मू और कश्मीर की बेटियाँ आगे बढ़कर नेतृत्व करने के लिए तैयार हैं। जिम्नास्टिक, वुशु, तलवारबाजी, थांग-ता और पेनक सिलाट में पदक

तालिका जम्मू और कश्मीर खेलों की उभरती बालिका शक्ति का एक ज्वलंत उदाहरण है।

पिछले पाँच वर्षों (2019-2025) में, जम्मू और कश्मीर ने 20 से अधिक खेल विधाओं में एक अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता सहित 54 राष्ट्रीय स्तर के आयोजनों की मेज़बानी की है, जो इसके इतिहास में अब तक का सर्वोच्च प्रदर्शन है। गुलमर्ग में शीतकालीन खेलों से लेकर श्रीनगर और जम्मू में लड़ाकू खेलों, टीम खेलों और पारम्परिक खेलों तक, जम्मू और कश्मीर एक अखिल भारतीय खेल स्थल के रूप में उभरा है। सभी 36 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के एथलीटों की भागीदारी ने जम्मू और कश्मीर को संस्कृतियों और प्रतिभाओं के मिलन स्थल के रूप में स्थापित किया है। यह 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को साकार करता है।

पुलवामा के फ्लडलाइट से जगमगाते मैदान और डल झील का झिलमिलाता पानी खेल के आयोजन स्थलों से कहीं अधिक हैं। वे आशा, महत्वाकांक्षा और परिवर्तन के मंच हैं। वे हमारे लोगों के लचीलेपन, हमारी सरकार के दृष्टिकोण और जम्मू और कश्मीर खेल परिषद के समर्पण को दर्शाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे दुनिया को बताते हैं कि जम्मू और कश्मीर के युवा न केवल इस केंद्रशासित प्रदेश के लिए, बल्कि पूरे देश के लिए चमकने हेतु तैयार हैं। खेल के एक नए युग का सूत्रपात हो चुका है। अपने युवाओं की शक्ति और अपने समुदायों के समर्थन के साथ, हम एक ऐसे भविष्य की रचना करेंगे जहाँ जम्मू और कश्मीर खेल उत्कृष्टता और राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित होगा।

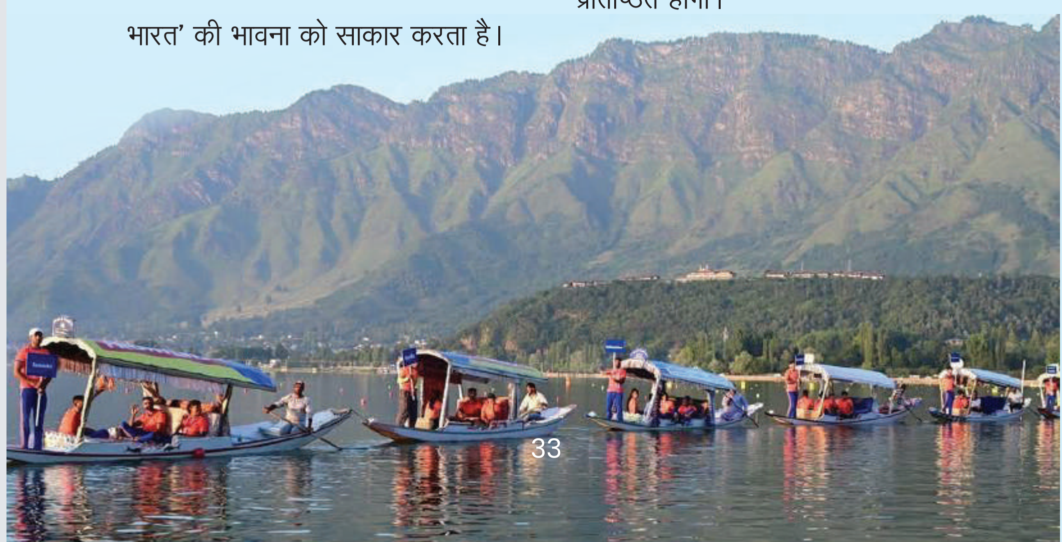

खेलो इंडिया वॉटर स्पोर्ट्स फ़ेस्टिवल 2025

डल झील पर नया सवेरा

डल झील पर आयोजित प्रतिष्ठित खेलो इंडिया वॉटर स्पोर्ट्स फ़ेस्टिवल 2025 से जम्मू-कश्मीर के लोगों में नए अवसरों और आकांक्षाओं की लहर उठी है। इससे न केवल क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता सभी के सामने आई बल्कि इसने युवाओं को खेलों से निकटता से जोड़ते हुए उन्हें इसे विकास और उपलब्धि के मार्ग के रूप में देखने को भी प्रोत्साहित किया है। भारत सरकार का, खेलों के मूलभूत ढाँचे और प्रतिभा विकास में बड़े पैमाने पर निवेश का उद्देश्य एकदम स्पष्ट है: क्षेत्र में खेलों को बढ़ावा देना, स्थानीय प्रतिभाओं को निखारना और जम्मू-कश्मीर को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय खेल मानचित्र पर सशक्त रूप से स्थापित करना।

KHELO INDIA
WATER SPORTS FESTIVAL 2025
JAMMU & KASHMIR | 21-23 AUGUST 2025
DAL LAKE KI SHAAN, KHEL SE BADHE PEHCHAAN

खेलो इंडिया वॉटर स्पोर्ट्स फ़ेस्टिवल का प्रतीक-चिह्न कश्मीर की आत्मा दर्शाता है जिसमें बर्फ़ से ढके पहाड़ों और चीड़ के पेड़ों से घिरी डल झील पर शिकारा तैरती दिखाई देती है। इस शांत झील में झलकती परछाइयाँ जहाँ कश्मीर की सुंदरता का प्रतिबिंब हैं वहीं खेलो इंडिया के रंगों में परम्परा, प्रकृति और खेलों की ऊर्जा मिल कर एक हो जाती हैं।

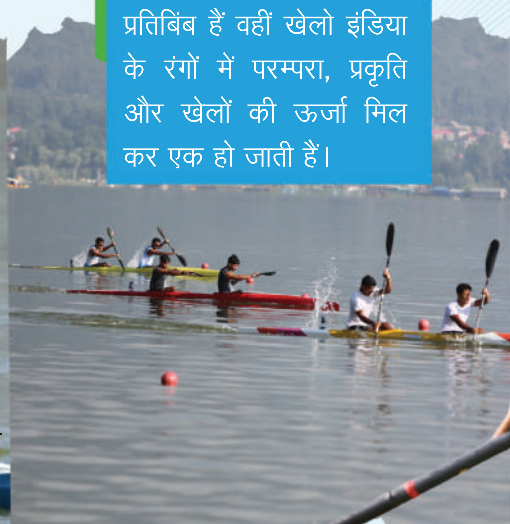

“ मैं पहली बार खेलो इंडिया गेम्स में खेली और मैंने श्रीनगर में इस अनुभव का भरपूर आनंद लिया। व्यवस्था, आवास और भोजन सभी कुछ बहुत बढ़िया था। मैं आभारी हूँ कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मुझसे बात की और आगामी खेलों के लिए मुझे प्रोत्साहित किया। मैं आगामी एशियाई खेलों में भारत के लिए पदक जीतने की पूरी कोशिश करूँगी और भावी प्रतियोगिताओं में सफलता के लिए निरंतर प्रयासरत रहूँगी। ”

रश्मिता साहू,
कैनोइंग में स्वर्ण पदक विजेता, ओड़ीशा

“ मै भारत सरकार का आभारी हूँ कि उसने श्रीनगर में पहला खेलो इंडिया वॉटर स्पोर्ट्स फ़ेस्टिवल आयोजित किया। इस इलाक़े में अपार प्रतिभा और खेलों की व्यापक सम्भावनाएँ हैं। मैं युवाओं से अपील करता हूँ कि वे अपनी पसंद का खेल चुनें और भारत का सर्वोच्च स्तर पर प्रतिनिधित्व करने का प्रयास करें। मेरा सपना ओलंपिक खेलों में पदक जीतने का है, और इसे साकार करने के लिए मैं ख़ूब मेहनत करूँगा। ”

मोहसिन अली,
कयाकिंग में स्वर्ण पदक विजेता जम्मू-कश्मीर

डॉ. अजय कुमार
अध्यक्ष,
संघ लोक सेवा आयोग

प्रतिभा सेतु

प्रत्येक अभ्यर्थी के सफ़र का सम्मान

भारतीय संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) की परीक्षाओं की गिनती दुनिया की सबसे कठिन प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में होती है। हर वर्ष लाखों अभ्यर्थी गहन समर्पण, धैर्य और वर्षों की कड़ी मेहनत से इनकी तैयारी करते हैं किन्तु इनमें से केवल एक छोटा-सा हिस्सा ही अंतिम सूची तक पहुँच पाता है। हालाँकि जो अभ्यर्थी बहुत कम अंतर से चयन सूची में जगह पाने से चूक जाते हैं वे भी उतने ही सक्षम होते हैं। उन्होंने परीक्षा के विभिन्न चरणों के दौरान शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुशासन, विश्लेषणात्मक गहराई और नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया होता है।

दूसरी ओर, उद्योग, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (PSUs), शोध संस्थान और निजी नियोक्ताओं को कुशल जनशक्ति की गम्भीर कमी की शिकायत हमेशा रहती है। वे ठीक उन्हीं गुणों की खोज में भर्ती, चयन और प्रशिक्षण पर भारी धनराशि ख़र्च करते हैं जो संघ लोक सेवा आयोग के अभ्यर्थियों में निहित होते हैं।

"कोई भी प्रयास व्यर्थ न जाए" – इस संवेदनशील विश्वास से प्रेरित प्रतिभा सेतु, संघ लोक सेवा आयोग के प्रतिभाशाली अभ्यर्थियों और उन उद्योगों एवं संस्थानों के बीच सेतु का कार्य करता है जिन्हें अत्यन्त प्रतिभावान लोगों की तलाश रहती है।

प्रतिभा सेतु की शुरुआत 2018 में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आरम्भ किए गए पब्लिक डिस्क्लोज़र पोर्टल से हुई। यह पोर्टल एक महत्त्वपूर्ण पहला क़दम था जिसका उद्देश्य उन अभ्यर्थियों की जानकारी सार्वजनिक करना था जो यूपीएससी की परीक्षाओं के ऊपरी पायदानों तक तो पहुँचे लेकिन अन्तिम पायदान पर चूक गए। हालाँकि यह एक उपयोगी शुरुआत थी किन्तु इसका सम्भावित लाभ पूरी तरह नहीं मिल सका क्योंकि उपलब्ध जानकारी नियोक्ताओं की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार नहीं की गई थी।

इस कमी को पहचान कर संघ लोक सेवा आयोग ने इस पहल को नए सिरे से तैयार करके प्रतिभा सेतु को इस प्रकार पेश किया जो बाज़ार के अधिक अनुकूल और प्रतिभाओं को अवसरों से सक्रिय रूप से जोड़ने में सक्षम

था। अभ्यर्थियों के आँकड़े, सार्वजनिक उपक्रमों, उद्योगों और शोध संस्थानों की आवश्यकताओं के अनुसार व्यवस्थित करके यह नया मंच, मात्र सूचना देने से आगे बढ़कर एक गतिशील सेतु बन गया।

इस परिवर्तन से इसे उल्लेखनीय गति मिली और नियोक्ताओं ने उच्च क्षमतावान इन अभ्यर्थियों से सम्पर्क करने में गहरी रुचि ली।

माननीय प्रधानमंत्री ने अगस्त 2025 के मन की बात प्रसारण में जब प्रतिभा सेतु का उल्लेख किया तो इसे महत्त्वपूर्ण प्रोत्साहन मिला। इसे संवेदनशील शासन और नवोन्मेषी सोच की मिसाल बताते हुए प्रधानमंत्री ने इसे प्रयास और प्रतिभा को महत्त्व देने वाली राष्ट्रीय पहल के रूप में रेखांकित किया। देश के सर्वोच्च नेतृत्त्व से मिले इस सम्मान से न केवल पोर्टल के प्रति जागरूकता बढ़ी बल्कि संघ लोक सेवा आयोग की टीम को इसका दायरा सुदृढ़ तथा विस्तारित करने की प्रेरणा भी मिली।

प्रतिभा सेतु की विशिष्टता उन अभ्यर्थियों की योग्यता पर आधारित है जो संघ लोक सेवा आयोग की प्रक्रिया में शामिल होते हैं। संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं की तैयारी और उनके विभिन्न चरणों में आगे बढ़ना केवल ज्ञान

का नहीं, बल्कि चरित्र और मानसिकता का भी परीक्षण होता है। इसका सबसे बड़ा कारण है कि यह परीक्षाएँ काफ़ी कड़ी होती हैं। संघ लोक सेवा आयोग की कुछ परीक्षाएँ इंजीनियरिंग, चिकित्सा, अर्थशास्त्र, सांख्यिकी या विज्ञान जैसे क्षेत्रों में विषय-विशेषज्ञता को समान गहनता से परखती हैं।

अपनी तैयारी के दौरान अभ्यर्थी केवल शैक्षणिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि उससे आगे की क्षमताएँ विकसित करते हैं। वे अनुशासन, विश्लेषणात्मक सोच, अभिव्यक्ति की स्पष्टता, नेतृत्त्व क्षमता, समय प्रबन्धन और दृढ़ता जैसे गुण विकसित करते हैं–ये वही विशेषताएँ हैं जिन्हें नियोक्ता अत्यधिक महत्त्व देते हैं। यहाँ तक कि जो अभ्यर्थी अन्तिम चरण पार नहीं कर पाते वे भी अक्सर लाखों उम्मीदवारों में शीर्ष 1–2% में होते हैं। चयन से थोड़ा पीछे रह जाना उनकी प्रतिभा को किसी दृष्टि से कम नहीं करता; यह तो केवल प्रणाली की अत्यधिक प्रतिस्पर्धा दर्शाता है।

प्रतिभा सेतु, एक द्विपक्षीय मंच के रूप में तैयार किया गया है जिसमें एक ओर संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के उन्नत चरणों तक पहुँचे अभ्यर्थी और दूसरी ओर उच्च क्षमता वाली प्रतिभाओं की तलाश वाले नियोक्ता होते हैं।

इस पोर्टल में, निम्नलिखित परीक्षाओं के साक्षात्कार चरण तक पहुँचने वाले अभ्यर्थी शामिल रहते हैं –

सिविल सेवा परीक्षा, भारतीय वन सेवा परीक्षा, केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल (ACs) परीक्षा, इंजीनियरिंग सेवा परीक्षा, संयुक्त भू-विज्ञानी परीक्षा, संयुक्त रक्षा सेवा (CDS) परीक्षा, भारतीय आर्थिक सेवा/भारतीय सांख्यिकी सेवा परीक्षा और संयुक्त चिकित्सा सेवा परीक्षा। इन सबको मिलाकर अभ्यर्थियों का एक व्यापक दायरा बनता है – इंजीनियरिंग, चिकित्सा, सांख्यिकी, अर्थशास्त्र, भूविज्ञान, विज्ञान और समाज विज्ञान।

केवल वही उम्मीदवार इसमें शामिल रहते हैं जिन्होंने संघ लोक सेवा आयोग की प्रारम्भिक, मुख्य या साक्षात्कार जैसी

कड़ी छानबीन पर आधारित परीक्षा उत्तीर्ण की होती है। यह नियोक्ताओं के लिए प्रामाणिकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है। पोर्टल पर उम्मीदवारों को उनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि, परीक्षा में उनका योग्यता स्तर और वैकल्पिक विषयों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है जिससे नियोक्ता अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप उपयुक्त प्रतिभा शीघ्र पहचान सकते हैं।

उम्मीदवार स्वयं तय करते हैं कि वे अपना ब्यौरा (बायोडाटा) सार्वजनिक करें या नहीं, जिससे उनकी गोपनीयता और सहमति सुरक्षित रहती है। पारम्परिक भर्ती प्रक्रियाओं के विपरीत जहाँ उद्योगों को प्रतिभा खोजने पर भारी खर्च करना पड़ता है वहीं प्रतिभा सेतु की मदद से इस प्रतिभा-सम्पन्न समूह तक पहुँचना पूरी तरह निःशुल्क है।

नियोक्ताओं के लिए प्रतिभा सेतु, प्रतिभाओं का एक ख़ज़ाना है। यहाँ उपलब्ध उम्मीदवार पहले ही दुनिया के सबसे कठिन प्रतिस्पर्धी मानकों पर परखे जा चुके हैं। यह प्रतिभाओं का अत्यन्त विविधतापूर्ण स्रोत है जिसमें डॉक्टर और इंजीनियर से लेकर अर्थशास्त्री और प्रशासक तक होते हैं। पोर्टल निःशुल्क होने के कारण उद्योगों को भर्ती पर भारी व्यय से मुक्ति मिलती है। अभ्यर्थी नेतृत्व क्षमता, समस्या-समाधान कौशल और दृढ़ता जैसे गुण लेकर आते हैं जो संगठनात्मक चुनौतियों से निपटने में सीधे उपयोगी सिद्ध होते हैं।

अन्त में कहा जा सकता है कि प्रतिभा सेतु मात्र एक पोर्टल नहीं अपितु अवसरों का एक राष्ट्रीय सेतु है जो लगभग-प्राप्त सफलता को वास्तविक उपलब्धि में और निराशा को गरिमा में बदलता है। माननीय प्रधानमंत्री के समर्थन से इस पहल को न केवल व्यापक पहचान मिली बल्कि इसे एक राष्ट्रीय स्वरूप भी मिला है जिससे यह भारत की व्यापक प्रतिभा रणनीति में मज़बूती से स्थापित है। यह एक प्रगतिशील विचार का प्रमाण है कि उत्कृष्टता की खोज में कोई भी सच्चा प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाना चाहिए।

शहीदों के गौरव की रक्षा

जितेंद्र सिंह की कहानी

सूरत के चहल-पहल भरे शहर में, पहाड़ों के सन्नाटे से दूर, जहाँ पहरेदार पहरा देते हैं, जितेंद्र सिंह राठौर नाम का एक साधारण सुरक्षा गार्ड रहता है। दो दशकों से भी ज्यादा समय से, वह किसी भी इमारत या सम्पत्ति से कहीं ज्यादा गहरी चीज की रक्षा कर रहा है – वह देश के शहीदों की स्मृति की रक्षा करता है, उनकी कहानियों को उस समर्पण के साथ संजोता है जो देशभक्ति के मूल सार को नए सिरे से परिभाषित करता है।

जितेंद्र सिंह का सफ़र एक सपने से शुरू हुआ – अपने पिता और पूर्वजों की तरह भारतीय सेना में सैनिक बनकर देश की सेवा करने का सपना। लेकिन 1999 में, कारगिल युद्ध के दौरान, सेना भर्ती की शारीरिक परीक्षा में वे सिर्फ़ एक सेंटीमीटर से चूक गए। दिल टूटा ज़रूर, लेकिन हारे नहीं, जल्द ही उन्हें एक शोकाकुल पिता के शब्दों में अपना उद्देश्य मिल गया। उन्होंने शहीद अर्जुन राम बसवाना के पिता के बारे में पढ़ा, जिन्होंने कहा था, "मेरा बेटा चला गया तो क्या हुआ, देश तो सुरक्षित है ना?" उस एक कथन ने जितेंद्र के मन में उद्देश्य की एक लौ जला दी – उन लोगों को सम्मान देने का आह्वान जिन्होंने सर्वोच्च बलिदान दिया था।

अटूट संकल्प के साथ उन्होंने वह कार्य शुरू किया जो आगे चलकर उनके जीवन का लक्ष्य बन गया: भारत के शहीदों की कहानियों को एकत्रित करना और उनका संरक्षण करना। उस समय उनके पास उन प्रेरक कहानियों वाले अखबार खरीदने के लिए दो रुपये भी नहीं होते थे। निडर होकर वे सुबह-शाम अपने गाँव की रेल पटरियों पर घूमते और फेंके हुए अखबारों को इकट्ठा करके वीरता और बलिदान की कहानियों को एक साथ जोड़ते। इन्हीं साधारण शुरुआतों से 'शहीद संग्रह' का जन्म हुआ।

जितेंद्र सिंह ने 26 वर्षों तक एक सुरक्षा गार्ड के रूप में काम किया और अपनी कमाई का एक-एक रुपया इस पवित्र मिशन को समर्पित कर दिया। आज उनका संग्रह राष्ट्रीय गौरव का एक स्मारकीय संग्रह है: प्रथम विश्व युद्ध में शहीद हुए 76,000 सैनिकों, द्वितीय विश्व युद्ध के 80,000 सैनिकों और भारत की स्वतंत्रता के बाद से 27,000 से अधिक शहीदों के अभिलेख। उनके पास 23,156 तस्वीरें और 26 क्विंटल दस्तावेज़ हैं, जिनका प्रत्येक पृष्ठ राष्ट्र के लिए समर्पित जीवन का प्रमाण है।

लेकिन जितेंद्र का काम सिर्फ़ संग्रह से कहीं आगे जाता है। यह प्रेम, स्मरण और जुड़ाव का कार्य है। उन्होंने जाना कि युद्ध के दौरान, सैनिक अक्सर अपने परिवारों को अपनी सलामती का

आश्वासन देते हुए घर पत्र लिखते थे, लेकिन उन पत्रों के पहुँचने से पहले ही वे शहीद हो जाते थे। इससे प्रभावित होकर, उन्होंने प्रण लियाः किसी भी शहीद के परिवार को कभी भी यह महसूस नहीं होगा कि उन्हें भुला दिया गया है। 15 पैसे के पोस्टकार्ड के ज़माने से, उन्होंने शहीद सैनिकों के परिवारों को सांत्वना और एकजुटता प्रदान करते हुए अनगिनत पत्र लिखे हैं। आज वे 15,561 शहीदों के परिवारों के सम्पर्क में हैं, जो राष्ट्र और उसके नायकों के बीच एक जीवंत सेतु हैं।

उनके समर्पण की कोई सीमा नहीं है। उन्होंने 2,500 शहीदों के माता-पिता के चरणों की मिट्टी एकत्र की है जो उनके बलिदान के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा का प्रतीक है। उन्होंने 300 शहीदों की मूर्तियाँ बनवाई हैं, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनकी विरासत उनके गृहनगरों में जीवित रहे। वे बिना रुके, इस विश्वास से प्रेरित होकर काम करते रहते हैं कि उनका जीवन राष्ट्र के काम आना चाहिए।

जितेंद्र सिंह की कहानी एक सशक्त अनुस्मारक है कि देशभक्ति केवल युद्ध के मैदानों या वर्दी तक सीमित नहीं है। यह प्रत्येक नागरिक में जन्मजात होती है—देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वालों को याद रखना, उनका सम्मान करना और उनसे प्रेरणा लेना हमारा कर्तव्य है। उनका मिशन इस विचार को

मूर्त रूप देता है कि सच्ची देशभक्ति उन कार्यों में निहित है जो राष्ट्र की सामूहिक स्मृति और नैतिक ताने-बाने में योगदान करते हैं, चाहे वो कितने भी छोटे क्यों न हों।

उनके असाधारण प्रयासों को देश के सर्वोच्च पद से मान्यता मिली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने मन की बात सम्बोधन में जितेंद्र सिंह के उल्लेखनीय मिशन पर प्रकाश डाला और कहा कि उनका कार्य प्रत्येक देशभक्त के लिए एक महान प्रेरणा है। तेज़ी से बदलती दुनिया में, जहाँ मूल्य अक्सर समय के साथ फीके पड़ जाते हैं, जितेंद्र सिंह गौरव के संरक्षक के रूप में खड़े हैं। उनका सपना एक 'शहीद हॉल' का निर्माण करना है जहाँ उनके विशाल संग्रह को संरक्षित किया जा सके और आने वाली पीढ़ियों के साथ साझा किया जा सके। इसके माध्यम से वह युवा भारतीयों को राष्ट्र की भावना को परिभाषित करने वाली साहस और बलिदान की कहानियों से प्रेरित करने की आशा करते हैं।

एक साधारण सुरक्षा गार्ड, जितेंद्र सिंह राठौर हमें सिखाते हैं कि किसी भी राष्ट्र की आत्मा उसकी स्मृति में निहित होती है। शहीदों के गौरव की रक्षा करके वे भारत के मूल सार की रक्षा करते हैं – हम सभी को याद दिलाते हैं कि

देशभक्ति सिर्फ़ महसूस करने से नहीं, बल्कि जीने से भी होती है, एक-एक करके याद करने से।

"कारगिल युद्ध के दौरान, जब भर्ती प्रक्रिया चल रही थी, मेरी लम्बाई एक सेंटीमीटर कम थी और मैं सेना में भर्ती नहीं हो सका। उस समय, मैंने एक अखबार में पढ़ा कि सैनिक अर्जुन राम बसवाना के पिता ने कहा था, 'बेटा चला गया तो क्या हुआ, देश तो सुरक्षित है ना।' यही वह पंक्ति थी जिसने मुझमें देशभक्ति के बीज बोए। मैं अपने पूर्वजों की तरह सेना में भर्ती नहीं हो सका, इसलिए मैंने शहीदों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने का सोचा।"

-जितेंद्र सिंह

पॉडकास्ट से विश्व मंच तक

भारत की कहानी ने जर्मन कोच को किया प्रेरित

आज के समय में कहानियाँ सरहदें नहीं देखतीं, बल्कि आवाज़ और भावनाओं की ताक़त से पूरी दुनिया तक पहुँच जाती हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम में सुनाई गई एक घटना ने यही साबित किया है। प्रधानमंत्री ने लेक्स फ्रिडमैन के साथ एक पॉडकास्ट में शहडोल के फ़ुटबॉल खिलाड़ियों का ज़िक्र किया था। इसे सुनकर जर्मनी के मशहूर फ़ुटबॉल कोच डिटमार बायर्सडॉर्फ़र इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने इन खिलाड़ियों को जर्मनी में प्रशिक्षण देने का प्रस्ताव दे दिया। यह घटना केवल खेल ही नहीं बल्कि संयोग और प्रेरणा की शक्ति का भी सुंदर उदाहरण है।

आज की डिजिटल दुनिया में पॉडकास्ट संवाद का नया माध्यम बन चुके हैं। पॉडकास्ट ने हर व्यक्ति को वैश्विक मंच दे दिया है। कोई भी अपने विचार, अनुभव और ज्ञान को लाखों लोगों तक पहुँचा सकता है। यह माध्यम केवल बातचीत नहीं बल्कि बड़े बदलावों की नींव रखने का साधन भी है। प्रधानमंत्री की बात और उसका असर जर्मनी तक पहुँचना इसी की मिसाल है।

पॉडकास्ट का सबसे बड़ा असर यही है कि यह दुनिया को और क़रीब ला रहा है। अब कोई छोटा गाँव, कोई साधारण क़िस्सा या किसी युवा का सपना इंटरनेट और पॉडकास्ट के ज़रिए वैश्विक चर्चा का हिस्सा बन सकता है। इसी पॉडकास्ट के ज़रिए शहडोल के खिलाड़ियों का हुनर अब अंतरराष्ट्रीय पहचान पाने की ओर अग्रसर है।

“

भारत में फ़ुटबॉल को प्रेरणादायक समर्थन देने लिए मैं प्रधानमंत्री मोदी का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। भारत में अपार प्रतिभा है जिसे और विकसित किया जा सकता है। ख़ुशी है कि शहडोल के युवा फ़ुटबॉल खिलाड़ियों – लड़कियों और लड़कों – और एक कोच को अपने यहाँ प्रशिक्षण देने का अवसर मिल रहा है। मुझे शहडोल की प्रतिभा को संवारने की प्रेरणा तब मिली जब मैंने प्रधानमंत्री मोदी को एक पॉडकास्ट में शहडोल का ज़िक्र करते सुना। मुझे उम्मीद है कि यह भारत–जर्मनी फ़ुटबॉल साझेदारी का एक नया अध्याय साबित होगा। आपके विश्वास और समर्थन के लिए धन्यवाद।

डिटमार बायर्सडॉर्फ़र, पूर्व जर्मन फ़ुटबाल खिलाड़ी एवं कोच, मैनेजिंग डायरेक्टर, एफसी इंगोल्शटट, जर्मनी

“

मैं माननीय प्रधानमंत्री जी, मुख्यमंत्री जी और खेल मंत्री जी का शुक्रगुज़ार हूँ कि उन्होंने एक छोटे से गाँव को इतना अच्छा प्लेटफ़ॉर्म दिया है। यहाँ से दो बालक, दो बालिकाएँ और एक कोच, जर्मनी जैसी जगह पर (ट्रेनिंग के लिए) जा रहे हैं। ये लोग वहाँ से जो सीखकर आएँगे, निश्चित रूप से उसका यहाँ पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

रईस अहमद, सहायक संचालक खेल एवं एन आई एस कोच, शहडोल, मध्य प्रदेश

सोलर दीदी की उज्ज्वल क्रांति

देवकी देवी का सफर

अक्षय ऊर्जा देश में ग्रामीण महिलाओं के जीवन में बदलाव ला रही है। इसमें और भी बहुत कुछ करने की क्षमता है। ऐसी ही एक कहानी बिहार के मुजफ्फरपुर के रतनपुरा गाँव में देखने को मिलती है। एक शांत क्रांति आकर ले रही है। सूर्य द्वारा संचालित इस क्रांति का नेतृत्व देवकी देवी अपने दृढ़ संकल्प से करती हैं। लोग उन्हें प्यार से 'सोलर दीदी' के नाम से पुकारते हैं।

देवकी का जीवन चुनौतियों से भरा रहा। कम उम्र में ही विवाहित होने के कारण उन्होंने सीमित संसाधनों और एक छोटे से खेत के बल पर चार बच्चों के पालन-पोषण का बोझ उठाया। वह एक स्वयं सहायता समूह का हिस्सा हैं। उन्हें सरकार की पीएम-कुसुम (प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान) योजना के बारे में पता चला। इस योजना के तहत सिंचाई के लिए सौर पम्पों को बढ़ावा दिया जाता है। हालाँकि इस तकनीक को अपनाने के उनके फैसले का कड़ा विरोध हुआ। उनके परिवार ने उन्हें चेतावनी दी, गाँव वालों ने उनका मजाक उड़ाया और सौर ऊर्जा की व्यवहार्यता पर संदेह व्यक्त किया गया। गाँव के लोगों ने देवकी को यह कहकर चेताया, "सब कुछ डीजल, बिजली/लाइन से चलता है। यह कोई पानी से चलने वाली मशीन है, जो तुम खरीद रही हो। तुम फँस जाओगी।" फिर भी, देवकी दृढ़ निश्चयी रहीं। अपने बेटे के साथ, उन्होंने 5-10 प्रतिशत ब्याज पर ऋण लिया और आगे बढ़ीं। उन्हें पूरा विश्वास था कि यह पहल उनकी किस्मत बदल सकती है।

सोलर पम्प की स्थापना

सोलर पम्प की स्थापना का रास्ता आसान नहीं था। खेतों तक पहुँच बनाने से मना कर दिया गया। इतना ही नहीं, एक किसान ने तो धमकी भी दी थी कि अगर स्थापना के दौरान कोई नुकसान हुआ तो वे 1,000 रुपए भी वसूलेंगे। सौभाग्य से, एक दयालु रिश्तेदार ने उन्हें अपने खेत में जाने की अनुमति दे दी। अंततः सोलर पम्प स्थापित हो गया। आज, देवकी का सोलर पम्प 40 एकड़ जमीन की सिंचाई करता है और 112 किसानों को सेवा प्रदान करता है। एक व्यक्तिगत उद्यम के रूप में शुरू हुआ यह काम अब एक सामुदायिक सम्पत्ति बन गया है। किसान उत्सुकता से उनसे पाइपलाइन का विस्तार करने के लिए आग्रह करते हैं, "दीदी, पाइपलाइन और बढ़ाओ। इतने सारे लोगों को लाभ मिल रहा है, क्या हमें नहीं मिलेगा?"

आर्थिक परिवर्तन

वित्तीय प्रभाव जोरदार रहा है। सोलर पम्प से पहले, देवकी को गुजारा करना मुश्किल था। अब, वह सालाना 1 लाख रुपए से अधिक उपार्जन करती हैं। वह कहती हैं, "खाने-पीने की भी कोई समस्या नहीं है।" उनकी मशीन कभी बंद नहीं होती। बरसात के मौसम में भी बारिश रुकने पर इसका इस्तेमाल किया जाता है। इसका लाभ दूसरे किसानों को भी मिलता है। पहले, एक कट्ठा जमीन की सिंचाई पर 200 रुपए खर्च करना पड़ता था। छह कट्ठे के लिए, किसान

1,200 रुपए देते थे। अब, सोलर दीदी के पम्प से, उसी जमीन की सिंचाई पर केवल 200 रुपए का खर्च आता है और समय भी कम लगता है। इस सुविधा से किसान अन्य आय-उत्पादक कार्य करके अपनी समग्र आजीविका में सुधार कर पाते हैं।"

देवकी के प्रयासों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 125वें 'मन की बात' कार्यक्रम में उनकी सराहना करते हुए बताया कि कैसे उन्होंने अपने गाँव का कायाकल्प कर दिया। उन्होंने कहा, "बिहार की देवकी जी ने सोलर पम्प से अपने गाँव की किस्मत बदल दी है।"

पीएम-कुसुम योजना

भारत में खेती से जुड़े लगभग 76 प्रतिशत क्रियाकलापों में महिलाओं का वर्चस्व है। जलवायु परिवर्तन कई ग्रामीण क्षेत्रों में वर्षा के पैटर्न में बदलाव के लिए जिम्मेदार है। इससे कई ग्रामीण महिलाओं के लिए पानी तक पहुँच एक प्राथमिक चिंता का विषय बन गई है, चाहे वह घरेलू इस्तेमाल के लिए हो, सिंचाई के लिए हो या पशुधन के लिए। इस प्रकार, कृषि उत्पादन के जोखिमों को कम करने और महिला किसानों की भलाई के लिए लघु-स्तरीय सिंचाई प्रणालियों तक पहुँच आवश्यक हो गई है।

नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) द्वारा पीएम-कुसुम योजना के अंतर्गत सौर ऊर्जा चालित सिंचाई प्रणालियों को अपनाने में सहायता के लिए सब्सिडी और फीड-इन-टैरिफ जैसे अन्य प्रोत्साहन प्रदान किए जाते हैं। इस योजना का लक्ष्य मार्च 2026 तक लगभग 34,800 मेगावाट सौर क्षमता जोड़ना है। इसके लिए कुल केंद्रीय वित्तीय सहायता 34,422 करोड़ होगी।

इसका लक्ष्य डीजल और जीवाश्म

ईंधन पर निर्भरता कम करना, कार्बन उत्सर्जन पर अंकुश लगाना और सतत ऊर्जा के माध्यम से किसानों को सशक्त बनाना है। देवकी की सफलता इसी व्यापक दृष्टिकोण का एक सूक्ष्म रूप है। उनकी कहानी इस बात का उदाहरण है कि कैसे सौर ऊर्जा आर्थिक विकास, सामाजिक सशक्तीकरण और पर्यावरणीय स्थिरता को गति प्रदान कर सकती है।

दूसरों के लिए देवकी का संदेश सरल किंतु प्रभावशाली हैः "मेरी तरह हिम्मत जुटाओ और कुछ काम करो। सब कुछ करो, तुम्हें भी नाम मिलेगा, तुम्हारा सम्मान भी बढ़ेगा।" एक सीमित जीवन से एक आत्मविश्वासी महिला उद्यमी बनने तक का उनका सफर, किसानों से यूपीआई भुगतान प्राप्त करना और सम्मान प्राप्त करना यह दर्शाता है कि सौर ऊर्जा केवल बिजली के बारे में नहीं है। यह आशा के दीप जगाने और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के बारे में भी है।

'सोलर दीदी' के रूप में, वे प्रगति की प्रतीक हैं और यह साबित करती हैं कि साहस और नवाचार से, सबसे कठिन परिस्थितियों को भी एक उज्ज्वल भविष्य में बदला जा सकता है। उनकी कहानी इस बात का भी प्रमाण है कि ग्रामीण भारत में, अक्षय ऊर्जा पहले से असम्बद्ध क्षेत्रों में ऊर्जा की उपलब्धता बढ़ा सकती है, रोजगार पैदा कर सकती है, सामाजिक परिवर्तन ला सकती है और आर्थिक विकास को गति दे सकती है।

"मुझे यह पसंद है। सब मुझे सोलर दीदी कहते हैं और मुझे यह बहुत पसंद है, जब मोदी जी ने मेरा नाम लिया तो मुझे बहुत अच्छा लगा। मुझे बहुत खुशी है कि मेरी तरह 130 बहनें हैं।"

- देवकी जी

अभियंता दिवस

सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का स्मरण

"मेरे प्यारे देशवासियो, 15 सितम्बर भारत के महान अभियंता मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया जी की जयन्ती का दिन है। हम इस दिन को अभियंता दिवस के रूप में मनाते हैं। अभियंता केवल मशीनें नहीं बनाते; वे कर्मयोगी हैं जो सपनों को हक़ीक़त में बदलते हैं। मैं भारत के प्रत्येक अभियंता की सराहना करता हूँ और उन्हें शुभकामनाएँ देता हूँ।"

–प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी,
'मन की बात' सम्बोधन में

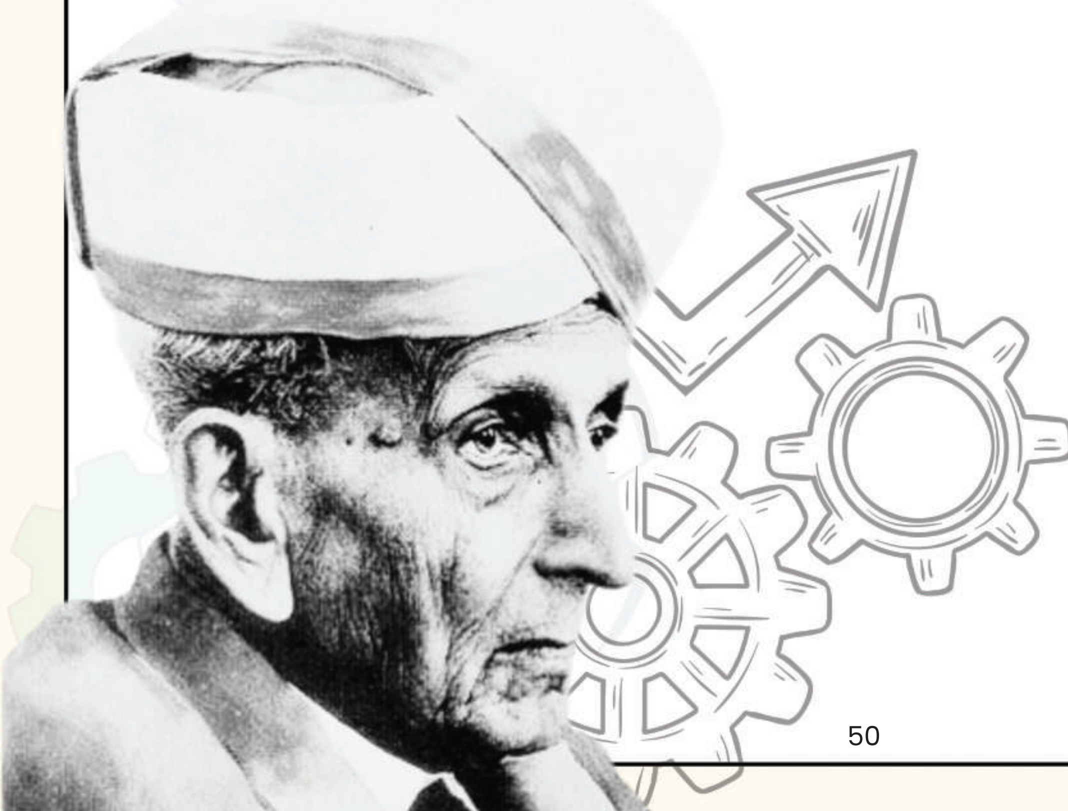

सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया (1861–1962) को इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उनकी महती सेवाओं और राष्ट्र निर्माण में योगदान के लिए 1955 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

मैसूर में कृष्णा सागर बाँध की योजना और क्रियान्वयन, हैदराबाद में बाढ़ संरक्षण प्रणाली तथा विशाखापत्तनम बन्दरगाह को कटाव से बचाने जैसी प्रतिष्ठित परियोजनाओं की योजना और कार्यान्वयन का श्रेय उन्हीं को जाता है।

उन्होंने स्वचालित वीयर वॉटर फ्लडगेट्स की एक प्रणाली का पेटेंट कराया जिसे पहली बार 1903 में पुणे के पास खड़कवासला जलाशय में लगाया गया था।

1912 से 1918 तक मैसूर के 19वें दीवान के रूप में उन्होंने, भद्रावती में आयरन एण्ड स्टील प्लांट, मैसूर सोप फ़ैक्ट्री और स्टेट बैंक ऑफ मैसूर जैसे अनेक ऐतिहासिक संस्थानों की स्थापना की।

अभियांत्रिकी और उद्योगों के माध्यम से भारत की प्रगति के लिए, सरकारी माध्यमों ने उनके प्रसिद्ध वाक्यांश "औद्योगीकरण करो या नष्ट हो जाओ" को उनकी दृष्टि के सार के रूप में ख़ूब उद्धृत किया था।

उनकी स्मृति में अभियंता दिवस उनके जन्मदिन को मनाया जाता है। उनकी 'अभियांत्रिकी प्रतिभा' और देश के आधुनिकीकरण में उनके योगदान का वर्णन सरकारी विज्ञप्तियों में श्रद्धांजलि के रूप में किया जाता है।

उन्होंने, रीकन्सट्रक्टिंग इण्डिया (1920) और प्लांड इक्नोमी फ़ॉर इण्डिया (1934) जैसी लोकप्रिय पुस्तकें लिखीं।

उन्होंने 90 वर्ष की आयु में अपनी आत्मकथा "मैमॉयर्स ऑफ़ माय वर्किंग लाइफ़" लिखी जिसका आरम्भ उनके सरकारी सेवा में प्रवेश (तत्कालीन बॉम्बे में सहायक अभियंता) से होता है।

ऑपरेशन पोलो

हैदराबाद के विलय की कहानी

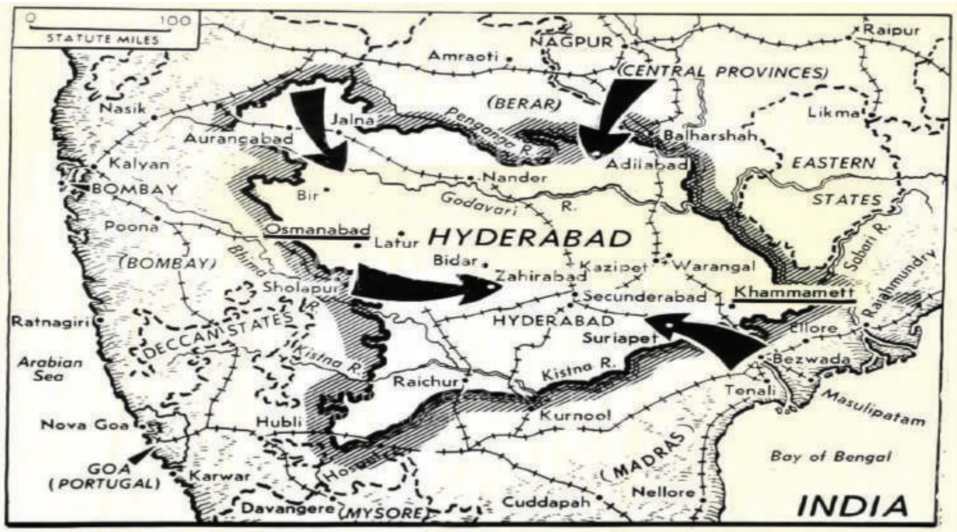

ऑपरेशन पोलो के दौरान भारतीय सैनिकों की आवाजाही — *स्रोत: विकिमीडिया कॉमन्स*

ऑपरेशन पोलो 13 से 18 सितम्बर तक चला एक पाँच दिवसीय सैन्य अभियान था जिसके बाद हैदराबाद रियासत को नव-स्वतन्त्र भारत संघ में शामिल किया गया था। यह अभियान, भारत के राजनीतिक एकीकरण की जटिल प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय था जिसे तत्कालीन उप-प्रधानमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने कुशलतापूर्वक अन्जाम दिया।

1947 के भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम के बाद, हैदराबाद के निज़ाम उस्मान अली ख़ान अपनी रियासत की सम्प्रभुता बनाए रखना चाहते थे। हालाँकि हैदराबाद का समूचा क्षेत्र भारत के भीतर आता था। बातचीत के दौरान एक यथास्थिति समझौते पर सहमति बनी किन्तु हैदराबाद की भीतरी स्थिति बिगड़ती गई। उग्रवादी समूह रज़ाकारों के उदय और आन्तरिक अशान्ति की ख़बरों से अन्दरूनी अस्थिरता पैदा हुई और क्षेत्रीय स्थिरता पर ख़तरा मंडराने लगा।

हैदराबाद का मामला सरदार पटेल ने जिस कुशलता से सुलझाया उसे उनके रणनीतिक नेतृत्व का प्रमाण माना जाता है। उनकी दोहरी रणनीति में, धैर्यपूर्ण कूटनीति और दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति का समावेश था। पटेल ने सभी राजसी शासकों के

प्रति निष्पक्ष और समान दृष्टिकोण अपनाए जाने की वकालत करते हुए उन्हें आश्वस्त किया कि उनके विलय को पूरा सम्मान मिलेगा और नए भारतीय ढाँचे में उनके विशेषाधिकार ध्यान में रखे जाएँगे। उनका उद्देश्य यह दिखाना था कि यह परिग्रहण (संयुक्त होना) अधिग्रहण नहीं अपितु एकजुट होकर भविष्य की साझेदारी है।

लेकिन जब निज़ाम का प्रशासन गोलमोल बात करते हुए अंतरराष्ट्रीय हस्तक्षेप की माँग करने लगा और रियासत में क़ानून व्यवस्था बदहाल होने दी, तो पटेल को लगा कि कूटनीति के रास्ते बन्द हो चुके हैं। उनका मानना था कि आज़ाद हैदराबाद, भारत के लिए एक निरन्तर संघर्ष का स्रोत बन जाएगा। उनके लिए, सैन्य कार्रवाई शुरू करने का निर्णय लेना सहज नहीं था, किन्तु भारतीय राष्ट्र की स्थिरता और अखंडता सुनिश्चित करने का एक ज़रूरी उपाय था।

आधुनिक चर्चाओं में, पटेल की भूमिका का महत्त्व अक्सर याद किया जाता है। हाल ही में एक भाषण में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने, पटेल के नेतृत्व की सराहना करते हुए बताया कि हैदराबाद में हुई घटनाओं पर पटेल को गहरा दुःख था और वे सभी राजसी शासकों के साथ समान व्यवहार के अपने वायदे पर अडिग थे। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि पटेल की दृढ़ किन्तु निष्पक्ष दृष्टि, जो बातचीत करने की तत्परता के साथ-साथ आवश्यकता पड़ने पर निर्णायक कार्रवाई करने का संकल्प रखती थी, उसी ने सरकार को ऑपरेशन पोलो शुरू करने पर सहमत होने में अहम भूमिका निभाई थी। इसी का नतीजा था कि हैदराबाद का, एक कठिन दौर से निकल कर भारतीय संघ में अन्तिम और शान्तिपूर्ण विलय हुआ जिसे आज हैदराबाद मुक्ति दिवस के रूप में मनाया जाता है।

ऑपरेशन पोलो के दौरान हैदराबाद में घुसते भारतीय सेना के टैंकों को देखते नागरिक
स्रोत: विकिमीडिया कॉमन्स

विश्वकर्मा जयंती

देश की नींव गढ़ते हाथों को सलाम

भारत की धरती पर परम्पराएं और त्यौहार केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं रहते बल्कि वे समाज के श्रमवीरों और कारीगरों की मेहनत का सम्मान करने का माध्यम भी बन जाते हैं। ऐसा ही एक पावन अवसर है विश्वकर्मा जयंती जो हर साल 17 सितंबर को मनाई जाती है। यह दिन भगवान विश्वकर्मा को समर्पित है जिन्हें सृष्टि का पहला शिल्पकार और देवताओं का वास्तुकार माना जाता है।

भगवान विश्वकर्मा को 'आदिकारीगर' कहा गया है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार उन्हीं के हाथों से इन्द्रपुरी, द्वारका नगरी, हस्तिनापुर और भगवान शिव का त्रिशूल निर्मित हुआ। इसलिए उन्हें शिल्प, कला और निर्माण का देवता माना जाता है।

विश्वकर्मा जयंती का महत्व

विश्वकर्मा जयंती का महत्व केवल धार्मिक नहीं बल्कि सामाजिक भी है। आज भी हमारे गाँवों, कस्बों और शहरों में ऐसे अनगिनत कारीगर, मिस्त्री, बढ़ई, मूर्तिकार, सुनार, लोहार और कुम्हार हैं जिनके हुनर से भारत की अस्ल तस्वीर बनती है। ये लोग बिना किसी बड़े मंच या रोशनी की चकाचौंध के, चुपचाप अपने औज़ारों के साथ देश की तरक्की की इमारत खड़ी करते रहते हैं। उनका श्रम ही है जो हमारी अर्थव्यवस्था, हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी और हमारी संस्कृति को मज़बूती देता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में अपने 'मन की बात' सम्बोधन में इन श्रमिक बंधुओं का विशेष रूप से ज़िक्र किया। उन्होंने कहा कि सुतार, लोहार, सुनार, कुम्हार, मूर्तिकार और बढ़ई जैसे शिल्पकार भारत की समृद्धि की बुनियाद रहे हैं।

पीएम विश्वकर्मा योजना

श्रमिकों, कारीगरों और शिल्पकारों के योगदान को मान्यता देने के लिए 'पीएम विश्वकर्मा योजना' की शुरुआत की गई है। इस योजना का उद्देश्य पारम्परिक कौशल से जुड़े लोगों को न सिर्फ़ सम्मान देना है बल्कि इसके द्वारा उन्हें आधुनिक प्रशिक्षण, आसान ऋण और बाज़ार से जोड़ने का अवसर भी प्रदान किया जा सकेगा।

भारत सरकार की यह योजना उन हाथों की क़द्र करती है जो बिना थके और बिना रुके हमारे समाज को सहेजते और बनाते हैं। प्रधानमंत्री का कहना है कि कौशल और शिल्प केवल जीविका का साधन नहीं बल्कि यह हमारी पहचान और विरासत है।

विश्वकर्मा जयंती हमें यह भी याद दिलाती है कि विज्ञान, टेक्नोलॉजी और आधुनिकता के इस दौर में भी कारीगरों का महत्व कम नहीं हुआ है। बल्कि अब

तो उनके हुनर को और भी बड़े स्तर पर पहचान दिलाने की जरूरत है। जब कोई लोहार अपने हथौड़े से औज़ार गढ़ता है, जब कुम्हार अपने चाक पर मिट्टी को आकार देता है या जब मूर्तिकार पत्थर को काटकर कला का रूप देता है तो यह सिर्फ़ मेहनत नहीं होती, बल्कि उसमें पीढ़ियों की विरासत और रचनात्मकता का संगम भी शामिल होता है।

कारीगरों का योगदान

भारत की आत्मा उसके गाँव-गली में बसने वाले कारीगरों में ही छुपी है। उनका हुनर हमें यह सिखाता है कि मेहनत और लगन से ही राष्ट्र की अस्ल तस्वीर बनती है। उनकी कारीगरी हमें यह एहसास दिलाती है कि सभ्यता और संस्कृति केवल किताबों से नहीं बल्कि हुनरमंद हाथों की मेहनत से भी जीवित रहती है।

आज की पीढ़ी के लिए यह बेहद महत्वपूर्ण है कि वे इन शिल्पकारों को सम्मान की नज़र से देखें और उनके योगदान को समझें। क्योंकि जब तक राष्ट्र अपने श्रमिकों और कारीगरों का सम्मान नहीं करता, तब तक उसकी

तरक्की अधूरी रहती है।

विश्वकर्मा जयंती हमें यही सिखाती है कि हमें उन हाथों का शुक्रगुज़ार होना चाहिए जिनसे राष्ट्र की इमारत का निर्माण होता है। जिन हथेलियों पर मेहनत की लकीरें उभरी होती हैं वही अस्ल में भारत की ताक़त हैं।

इस पावन अवसर पर हमें प्रण करना चाहिए कि हम अपने विश्वकर्मा बंधुओं की मेहनत की क़द्र करेंगे, उन्हें आगे बढ़ाने में सहयोग करेंगे और उनके कौशल को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने का प्रयास करेंगे। यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी और यही हमारे राष्ट्र की प्रगति का आधार भी है।

विदेश में भारतीय संस्कृति

प्रतिमाएँ, कहानियाँ और साझी धरोहर

भारतीय संस्कृति, पूरे विश्व में सहेजी और सम्मानित की जाती है। यूरोप के छोटे क़स्बों से लेकर उत्तर अमरीका के व्यस्त शहरों तक भारतीय सभ्यता की छाप मन्दिरों, सामुदायिक केंद्रों, कला प्रदर्शनियों, यहाँ तक कि अन्य संस्कृतियों के उन लोगों के दिलों में भी दिखाई देती है जिन्होंने भारत की शाश्वत ज्ञान-परम्परा अपनाई है। इसकी उपस्थिति केवल अनुष्ठानों या त्यौहारों तक सीमित नहीं है; यह शान्ति, सद्भाव और करुणा जैसे मूल्यों में जीवित है जो मानवता को मिला भारत का अनुपम उपहार है।

हाल ही में, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद (ICCR) के 'रामायण के माध्यम से विश्व को जोड़ना' कार्यक्रम के अंतर्गत, इटली के छोटे से नगर कैम्प-रोतोंदो में महर्षि वाल्मीकि की प्रतिमा का अनावरण हुआ जो सीमाओं से परे भारतीय धरोहर के प्रति बढ़ता सम्मान दर्शाता है। वहाँ रहने वाले भारतीय समुदाय के लिए यह प्रतिमा केवल एक प्रतिमा नहीं अपितु अपनत्व और सांस्कृतिक गर्व का प्रतीक है। रामायण के पूज्य लेखक महर्षि वाल्मीकि आज भी लोगों को पीढ़ी दर पीढ़ी, अपने धर्म, दृढ़ता और भक्ति के

सन्देश से प्रेरित करते हैं। एक इतालवी नगर में उनकी उपस्थिति याद दिलाती है कि भारत के प्राचीन ऋषियों का नैतिक मार्गदर्शन, भौगोलिक सीमाओं और समय से कहीं आगे है।

इसी प्रकार कनाडा के मिसीसागा में, भगवान श्रीराम की 51 फुट ऊँची प्रतिमा के अनावरण ने भारतीय प्रवासी समुदाय और अन्य के बीच उत्साह की लहर पैदा कर दी। यह प्रतिमा, उत्तर अमरीका में श्रीराम की सबसे ऊँची प्रतिमा मानी जा रही है। रामायण के प्रमुख पात्र भगवान राम सत्य, न्याय और कर्त्तव्य जैसे उन मूल्यों के प्रतीक हैं जिनका सार्वभौमिक महत्त्व है। प्रवासी समुदाय के अनेक लोगों के लिए यह प्रतिमा न केवल उनकी आध्यात्मिक जड़ें मज़बूत करती है, बल्कि विदेश में जन्मी नई पीढ़ी को भी अपनी पैतृक परम्पराओं से जुड़ने का अवसर देती है।

रूस के व्लादिवोस्तोक में हाल ही में भारत के महावाणिज्य दूतावास ने, रूसी-भारतीय क्लब और प्रिमोर्ये स्टेट आर्ट गैलरी के सहयोग से एक अनोखी प्रदर्शनी आयोजित की जिसमें 5 से 16 वर्ष की आयु के रूसी बच्चों की, रामायण से प्रेरित विषयों पर बनाई गई पेंटिंग्स प्रदर्शित हुईं। इससे स्पष्ट होता है कि यह महाकाव्य, भारत से बहुत दूर रहने वालों के साथ भी कितनी गहराई से जुड़ा है। यह प्रयास बताते हैं कि विश्व स्तर पर भारतीय संस्कृति उन लोगों द्वारा भी किस नई दृष्टि से देखी और उत्सव की तरह मनाई जा रही है जिनका भारत से कोई पैतृक सम्बन्ध नहीं है।

ये उदाहरण एक सशक्त सच्चाई दर्शाते हैं कि भारतीय संस्कृति एक साझा धरोहर बन चुकी है जो सीमाओं के पार विभिन्न समुदायों को जोड़ती है। रामायण, महाभारत, और महर्षि वाल्मीकि जैसे ऋषियों की शिक्षाएँ केवल धार्मिक ग्रन्थों में नहीं बल्कि सार्वभौमिक मूल्यों के भंडार की तरह देखी जाती हैं। बड़ों के प्रति सम्मान, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और बुराई पर अच्छाई की विजय जैसे सिद्धान्त हर समाज में गूँजते हैं।

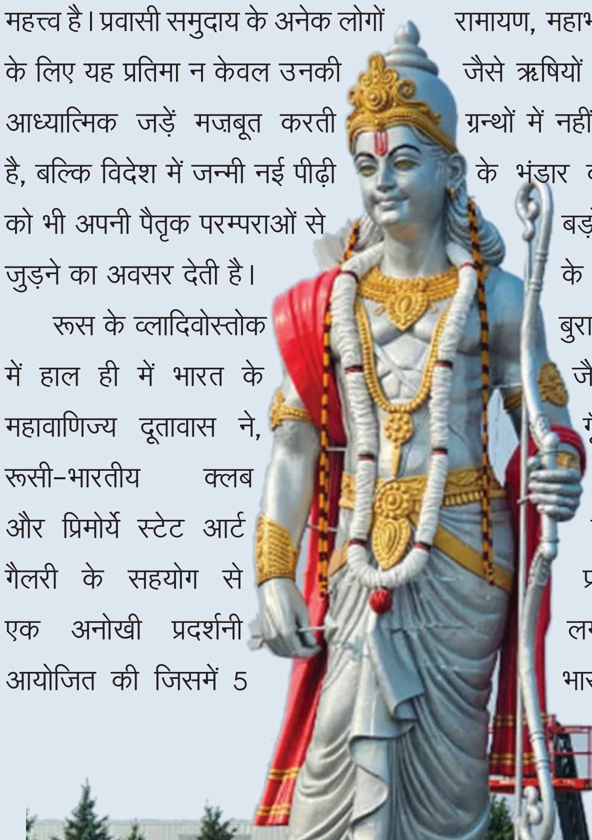

इस सांस्कृतिक प्रसार के केन्द्र में भारतीय प्रवासी समुदाय है। आज लगभग साढ़े तीन करोड़ भारतीय विदेशों में रहते हैं। वे

दुनिया के सबसे बड़े प्रवासी समुदायों में से एक हैं। वे हमारे सांस्कृतिक दूत का काम यह सुनिश्चित करते हुए करते हैं कि परम्पराएँ संरक्षित रहें और उन्हें उस देश के अन्य समुदायों से साझा भी किया जाए। विदेशों में प्रतिमाओं की स्थापना, प्रदर्शनियों का आयोजन और त्योहारों का उत्सव, मुख्यतः उनकी प्रतिबद्धता और अपनी जड़ों से भावात्मक जुड़ाव के कारण ही सम्भव हो पाता है। फिर भी, इस प्रसार की विशेषता यह है कि यह केवल भारतीयों तक सीमित नहीं है; प्रायः स्थानीय समुदाय भी इन उत्सवों में शामिल होते हैं जो सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पारस्परिक सम्मान का प्रतीक है।

आज की दुनिया पहले से कहीं अधिक आपस में जुड़ी है और भारत की सॉफ्ट पावर – यानी इसकी संस्कृति, दर्शन और परम्पराएँ – वैश्विक सद्भाव में एक महत्त्वपूर्ण योगदान हैं। जहाँ तकनीक और व्यापार राष्ट्रों को जोड़ते हैं, वहीं संस्कृति भावनात्मक सम्बन्धों को बल देती है। इटली में महर्षि वाल्मीकि की प्रतिमा, कनाडा में भगवान राम की

Гречка Вероника, 12 лет, "Равана похищает Ситу", (картон, гуашь)
ДШИ №1 им. С. Прокофьева г. Владивостока, педагог Лапаев В. Н.

भव्य मूर्ति या रूस में रामायण के दृश्य चित्रित करते हुए रूसी बच्चे– ये कोई अलग-थलग घटनाएँ नहीं हैं। ये एक व्यापक कथानक का हिस्सा हैं जिसमें भारत की विरासत यह याद दिलाते हुए कि मानवता समान आदर्श साझा करती है, एक वैश्विक धरोहर बन गई है।

जैसा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने मन की बात सम्बोधन में कहा कि ऐसा विकास देखना आनंद देता है। यह उस सांस्कृतिक आत्मविश्वास का प्रतीक है जहाँ भारत केवल भीतर ही नहीं झाँकता अपितु बाहर भी योगदान देता है, अपनी शाश्वत कथाओं, मूल्यों और परम्पराओं से विश्व को समृद्ध करता है। विदेशों में भारतीय संस्कृति केवल प्रतिमाओं या कथाओं तक सीमित नहीं है; यह एक साझा धरोहर है जो महाद्वीपों के आर-पार लोगों को एकजुट करती है, हमें याद दिलाती है कि भौगोलिक सीमाएँ विभाजित कर सकती हैं, लेकिन संस्कृति जोड़ती है।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

कार्रवाई के लिए आह्वान!

125वां संस्करण

वोकल फॉर लोकल	एक मार्ग- 'आत्मनिर्भर भारत'; एक लक्ष्य - 'विकसित भारत'
साथियो, इस आनंद के बीच, स्वच्छता पर भी बल देते रहिए	मैं फुटबॉल प्रेमियों से आग्रह करता हूँ कि जब भी उन्हें समय मिले, वे शहडोल आएँ और वहाँ हो रही खेल क्रांति को करीब से देखें

India in Liberia @IndiainLiberia

Indian culture takes over the world! -PM Modi in #MannKiBaat

@PMOIndia @narendramodi @PIB_India @mygovindia @airnewsalerts @DDNewslive @meaindia @Indiandiplomacy @MIB_India @diaspora_india

> **PMO India** @PMOIndia · Aug 31
> Indian culture takes over the world! #MannKiBaat

India in Australia @HCICanberra

Fascinating examples from Italy, Canada, and Russia, reflecting that Maharshi Valmiki and Ramayana continue to echo across cultures, carrying timeless values. #MannKiBaat #mannkibaat2025

@MEAIndia @IndianDiplomacy @MinOfCultureGoI @iccr_hq @PMOIndia @mygovindia @MIB_India @PIB_India

> **PMO India** @PMOIndia · Aug 31
> Indian culture takes over the world! #MannKiBaat

Dr. S. Jaishankar @DrSJaishankar

In today's #MannKiBaat, PM @narendramodi highlighted the growing appreciation of Indian culture globally.

Do tune in youtube.com/live/X5DLhrF6Y...

> **PMO India** @PMOIndia · Aug 31
> Indian culture takes over the world! #MannKiBaat

Chowna Mein @ChownaMeinBJP

Glimpses from the 125th episode of #MannKiBaat, at the District BJP Office, Namsai, to listen to the inspiring words of Hon'ble PM Shri @narendramodi ji.

The address highlighted India's journey of development, people's participation, and collective responsibility towards a stronger and self-reliant Nation. Always a moment of learning and motivation to walk together in service of society and the country.

Office of Kiren Rijiju @RijijuOffice

PM Modi urges pride in 'swadeshi' products during 'Mann Ki Baat' broadcast
business-standard.com/india-news/pm-...

via NaMo App

PM Modi urges pride in 'swadeshi' products during 'Mann Ki Baat' broadcast

BUSINESS STANDARD SEP 01, 2025

Saraswathi Pidaparthy @Saraswathi44880

PM Modi's Mann ki Baat muse: How Bihar's 'Solar Didi' is powering a rural revolution
moneycontrol.com/city/pm-modi-s...

via NaMo App

PM Modi's Mann ki Baat muse: How Bihar's 'Solar Didi' is powering a rural revolution

MONEY CONTROL SEPTEMBER 01, 2025

Suvendu Adhikari @SuvenduWB

Tuned in to Hon'ble Prime Minister; Shri @narendramodi Ji's Mann Ki Baat along with @BJP4Bengal Karyakartas & Supporters at Nandigram.

Hon'ble PM hailed the efforts of the National Disaster Response Force (NDRF), the State Disaster Response Force (SDRF), and Security Forces during the rescue operation amid monsoon mayhem causing flood situation across India especially in the hilly regions.
PM Modi announced the launch of a new digital platform 'Pratibha Setu' aimed at supporting aspirants of the Union Public Service Commission (UPSC) examinations who narrowly missed making it to the final merit list. The databank on 'Pratibha Setu' already has details of over 10,000 such talented youth.

@BJP4India

India in Jamaica @hcikingston

Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi in #MannKiBaat:

"Young footballers from Shahdol inspired a German coach, who has invited them to train in Germany."

#MannKiBaat

@MEAIndia @PMOIndia @mygovindia @IndianDiplomacy @DDNewslive @airnewsalerts @PIB_India

> **PMO India** @PMOIndia · Aug 31
> Young footballers from Shahdol inspired a German coach, who has invited them to train in Germany. #MannKiBaat

Vikas Kumar BJP @VikasKumarBJP

PM Modi urges pride in 'swadeshi' products during 'Mann Ki Baat' broadcast
business-standard.com/india-news/pm-...

via NaMo App

PM Modi urges pride in 'swadeshi' products during 'Mann Ki Baat' broadcast

BUSINESS STANDARD SEPTEMBER 01, 2025

एक ही मंत्र वोकल फॉर लोकल, एक ही रास्ता आत्मनिर्भर भारत : मोदी

पीएम का आह्वान : उपहार वही जो भारत में बना हो, पहनावा वही जो भारत में बुना हो, सजावट वही जो भारत में बने सामान से हो, रोशनी वही जो भारत में बनी झालरों से हो, त्योहार नजदीक...जीवन की हर जरूरत में सब कुछ स्वदेशी हो

अमर उजाला ब्यूरो/एजेंसी

पुलवामा में पहला डे-नाइट मैच

प्राकृतिक आपदाएं परीक्षा ले रहीं

भारत की संभावनाओं पर दुनिया की नजर

देश की परीक्षा ले रही हैं प्राकृतिक आपदाएं : मोदी

Unity of country is very important: PM

प्राकृतिक आपदाओं से निपटने में तकनीक रही अहम, भारत की अंतरिक्ष उड़ान प्रेरणादायी

किसानों की नई पहचान बनी 'सोलर दीदी'

▸ 'मन की बात' में पीएम मोदी ने दिया 'वोकल फॉर लोकल' का मंत्र

नई दिल्ली, 31 अगस्त. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 125वीं कड़ी में देश और समाज से जुड़े कई अहम विषयों पर विचार साझा किए.

खेल से लेकर संस्कृति, स्वदेशी अभियान, रोजगार अवसर, सौर ऊर्जा, आपदा प्रबंधन और ऐतिहासिक घटनाओं तक, मोदी के संबोधन ने नागरिकों को प्रेरित करने वाला संदेश दिया. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि हाल के दिनों में जम्मू-कश्मीर ने खेल जगत में जो उपलब्धियां हासिल की हैं, उन्होंने पूरे देश को गर्वित किया है. उन्होंने इसे बदलते भारत और युवाओं की नई ऊर्जा का प्रमाण बताया.

मोदी ने 'मन की बात' में कहा कि बाढ़ और बारिश की तबाही के बीच जम्मू-कश्मीर में दो ऐतिहासिक आयोजन हुए. पहला आयोजन पुलवामा के स्टेडियम में हुआ, जहां पहली बार डे-नाइट क्रिकेट मैच खेला गया. यह मैच 'रॉयल प्रीमियर लीग' का हिस्सा था जिसमें राज्य की कई टीमें उतरीं. हजारों युवाओं ने रात के समय क्रिकेट का आनंद लिया. मोदी ने कहा कि पहले पुलवामा में ऐसा संभव नहीं था, लेकिन अब देश बदल रहा है और नई उम्मीदें जन्म ले रही हैं.

खेलों से चमका जम्मू-कश्मीर

दूसरा आयोजन श्रीनगर की डल झील पर आयोजित पहला 'खेलो इंडिया जल स्पोर्ट्स उत्सव' था. इस आयोजन ने जल क्रीड़ा को बढ़ावा देने की दिशा में नया अध्याय जोड़ा. इसमें पूरे देश से 800 से अधिक एथलीटों ने हिस्सा लिया, जिनमें महिला खिलाड़ियों की भागीदारी भी पुरुषों के बराबर रही. मोदी ने विशेष रूप से मध्य प्रदेश को बधाई दी जिसने सबसे अधिक पदक जीते, जबकि हरियाणा और ओडिशा क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे. मोदी ने कहा कि जम्मू-कश्मीर की सरकार और वहां की जनता ने जिस तरह उत्सव का आयोजन किया.

पीएम ने कहा कि आयोजन के अनुभव को साझा करने के लिए उन्होंने दो प्रतिभाशाली खिलाड़ियों से बात की. ओडिशा की रश्मिता साहू, जिन्होंने कैनोइंग स्पर्धा में दो स्वर्ण पदक जीते, ने बताया कि खेल सुविधाओं के अभाव के बावजूद उन्होंने संघर्ष कर यह मुकाम हासिल किया. वहीं श्रीनगर के मोहसिन अली ने कहा कि उनका सपना देश के लिए ओलंपिक में पदक लाना है. उन्होंने विश्वास जताया कि ये आयोजन आने वाले समय में क्षेत्र के युवाओं को खेलों से जोड़ने और उन्हें विश्व स्तर पर पहचान दिलाने में अहम भूमिका निभाएंगे.

मन की बात | प्रधानमंत्री ने स्वदेशी उत्पादों का इस्तेमाल कर भारत को आत्मनिर्भर बनाने का किया आह्वान

हमारे जीवन की हर जरूरत में सब कुछ हो स्वदेशी : मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आगामी त्योहारी सीजन के मद्देनजर रविवार को देशवासियों से स्वदेशी उत्पादों का गौरवपूर्वक इस्तेमाल करने की अपील की। उन्होंने स्थानीय उत्पादों के खुलकर इस्तेमाल (वोकल फॉर लोकल) के मंत्र पर जोर देते हुए कहा कि आत्मनिर्भर भारत का मार्ग विकसित भारत बनाने में मददगार साबित होगा।

देश की परीक्षा ले रहीं प्राकृतिक आपदाएं, घटनाओं से हर भारतीय दुखी

प्रधानमंत्री ने बरसात के मौसम में प्राकृतिक आपदाओं के कहर पर भी चिंता व्यक्त की। मोदी ने कहा कि इस मानसून में, प्राकृतिक आपदाएं देश की परीक्षा ले रही हैं। उन्होंने कहा कि कहीं मकान तहस-नहस हो गए, कहीं खेत जलमग्न हो गए, बड़ी संख्या में परिवार बर्बाद हो गए। कहीं पुल पानी के तेज बहाव में बह गए, सड़कें बह गईं, लोगों का जीवन खतरे में पड़ गया। इन घटनाओं ने हर भारतीय को दुखी किया है। प्रधानमंत्री ने बचाव अभियान के दौरान राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ), राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) और सुरक्षाबलों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि जहां भी संकट आया, एनडीआरएफ-एसडीआरएफ के हमारे जवानों और अन्य सुरक्षाबलों ने लोगों को बचाने के लिए दिन-रात काम किया। जवानों ने प्रौद्योगिकी की भी मदद ली। थर्मल कैमरे, लाइफ डिटेक्टर, खोजी कुत्तों और ड्रोन निगरानी की मदद से राहत कार्यों में तेजी लाने की कोशिश की गई।

उन्होंने 'मन की बात' कार्यक्रम में कहा कि जीवन की हर जरूरत में सबकुछ स्वदेशी होना चाहिए। मोदी अमेरिका की ओर से भारतीय वस्तुओं पर 50 प्रतिशत शुल्क लगाए जाने के बाद देश के आत्मनिर्भर बनने की आवश्यकता पर लगातार जोर दे रहे हैं।

देश के विभिन्न भागों में गणेश उत्सव, दुर्गा पूजा और दीपावली उत्सव के आगमन के अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि लोगों को त्योहारों के दौरान उपहार, कपड़े, सजावट की वस्तुएं या अन्य कोई चीज खरीदते समय स्वदेशी उत्पादों को नहीं भूलना चाहिए। उन्होंने कहा कि गर्व से कहो यह स्वदेशी है, गर्व से कहो यह स्वदेशी है, गर्व से कहो यह स्वदेशी है। हमें इसी भावना के साथ आगे बढ़ना है। एक ही मंत्र है वोकल फॉर लोकल, एक ही रास्ता है आत्मनिर्भर भारत, एक ही लक्ष्य है विकसित भारत। मोदी ने कहा कि रामायण और भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम अब दुनिया के हर कोने तक पहुंच रहा है। प्रधानमंत्री ने बताया कि इस महीने की शुरुआत में कनाडा के मिसिसागा में भगवान राम की 51 फुट ऊंची प्रतिमा का अनावरण किया गया। इसी महीने रूस के बेहद ठंडे इलाके व्लादिवोस्तोक में एक अनोखी प्रदर्शनी आयोजित की गई।

मोदी ने सिविल सर्विसेज क्वॉलिफाई नहीं करने वालों का मनोबल बढ़ाया

ସ୍ୱଦେଶୀ ଜିନିଷ ଆପଣାଇବାକୁ ମୋଦୀଙ୍କ ଆହ୍ୱାନ

ਸ਼ਾਨ ਨਾਲ ਕਹੋ ਇਹ ਸਵਦੇਸ਼ੀ ਹੈ : ਮੋਦੀ

ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨੇ 'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' ਦੇ 125ਵੇਂ ਐਪੀਸੋਡ 'ਚ ਦੇਸ਼ਵਾਸੀਆਂ ਨੂੰ ਦਿੱਤਾ ਸੰਦੇਸ਼

ਜਾਗਰਣ ਬਿਊਰੋ, ਨਵੀਂ ਦਿੱਲੀ :

ਕਿਹਾ- ਇੱਕੋ ਮੰਤਰ 'ਵੋਕਲ ਫਾਰ ਲੋਕਲ', ਇੱਕੋ ਰਸਤਾ 'ਆਤਮ-ਨਿਰਭਰ ਭਾਰਤ' ਤੇ ਇੱਕੋ ਟੀਚਾ 'ਵਿਕਸਿਤ ਭਾਰਤ'

ਸਿਵਲ ਸੇਵਾ ਦੇ ਉਮੀਦਵਾਰਾਂ ਲਈ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਸੇਤੂ ਪੋਰਟਲ

प्रतिभा सेतु से मेधावी उम्मीदवारों को नौकरी के अवसर मिलेंगे

मन की बात

प्राकृतिक आपदाएं देश की परीक्षा ले रहीं

शहडोल के खिलाड़ी जर्मनी जाएंगे

जम्मू-कश्मीर की उपलब्धि खास

स्वदेशी सामान के इस्तेमाल पर जोर

दुनिया के हर कोने में पहुंच रही भारतीय संस्कृति

புதிய வாய்ப்பு!

उपहार वही दें, जो भारत में बना हो

'मन की बात' कार्यक्रम में पीएम मोदी का स्वदेशी अपनाने का संदेश

दिव्य हिमाचल ब्यूरो – नई दिल्ली

- कहा, प्राकृतिक आपदाएं देश की परीक्षा ले रहीं
- जम्मू-कश्मीर की उपलब्धियां भी गिनाईं
- यूपीएससी में असफल लोगों के लिए प्रतिभा सेतु का जिक्र

'मन की बात' में पीएम मोदी ने किया दुनियाभर में बढ़ रहे भारतीय संस्कृति के प्रभाव का जिक्र

'प्रतिभा सेतु' से लेकर स्पेस टेक तक, पीएम मोदी के संबोधन की 10 बड़ी बातें

سیلاب اور بارشوں کے چیلنجوں کے باوجود کھیلوں کے شعبے میں اہم سنگ میل حاصل

جموں وکشمیر کیساتھ پوری قوم بدل رہی ہے اور ترقی کی نئی بلندیوں کو چھو رہی ہے

ہزاروں لوگ پلوامہ میں رات کو کرکٹ سے لطف اندوز ہو رہے تھے یہ دیکھنے کیلئے ایک منظر تھا

جہلم ڈل میں منعقدہ واٹر اسپورٹس فیسٹیول میں 800 سے زائد کھلاڑیوں نے حصہ لیا: وزیراعظم مودی

ہندوستان اور چین دو طرفہ تعلقات کو بہتر بنانے کے تئیں پرعزم

وزیراعظم کی چینی صدر شی جن پنگ کے ساتھ ملاقات

मन की बात : बारिश से टेरमर में हो रहे नुकसान पर प्रधानमंत्री ने जताया दुख

जर्मनी जाएंगे शहडोल के फुटबॉलर

मध्यप्रदेश की खेल प्रतिभाएं वैश्विक पहचान बना रही हैं : डॉ. मोहन यादव

Floodlights in Pulwama, oars on Dal Lake: PM hails J&K new face

Young People Of J&K Have Strength To Make Nation Proud: Modi

MENTIONED IN MAAN KI BAAT

उल्लेखनीय — 125वीं मन की बात में प्रधानमंत्री ने कहा- खेलों ने राज्य को दी नई ऊर्जा

पीएम मोदी बोले, जम्मू-कश्मीर को खेलों से मिली नई पहचान

• नई दिल्ली / राज न्यूज नेटवर्क

पुजारा को पीएम ने लिखा भावुक पत्र

प्रधानमंत्री ने दो खिलाड़ियों से बातचीत भी की

મન કી બાતના ૧૨૫મા એપિસોડમાં સ્વદેશી પર ભાર મુકાયો, કહ્યું- દરેક જરૂરિયાતમાં બધું સ્વદેશી હોય

મન કી બાતમાં મોદી બોલ્યા- એક જ મંત્ર 'વોકલ ફોર લોકલ'; એક જ માર્ગ, 'આત્મનિર્ભર ભારત'

છેલ્લાં કેટલાંક અઠવાડિયાંમાં આપણે પૂર અને ભૂસ્ખલનનો કહેર જોયો છે, જેનાથી બધાં દુઃખી છે

સ્વચ્છતા ત્યાં તહેવારોનો આનંદ

মন কি বাত-এর ১২৫তম ভাষণে প্রধানমন্ত্রী

উৎসবে স্বদেশী পণ্যে জোর

Odisha's canoeing player Rashmita Sahoo elated after PM Modi mentions her in 'Mann Ki Baat'

PM highlights Sardar Patel's role in liberating Hyd from Nizam rule

Times News Network

New Delhi: PM Narendra Modi, in his monthly radio talk 'Mann Ki Baat', Sunday highlighted the decisive role of Sardar Vallabhbhai Patel in liberating Hyderabad from the Nizam's rule, a milestone that unified India post-independence.

Reiterating the country will celebrate 'Hyderabad Liberation Day' next month, the PM said it was Patel who persuaded the cabinet headed by Jawaharlal Nehru to send the Army to ensure that Hyderabad remained a part of India, and recalled the courage of all those heroes who took part in Operation Polo, through which Hyderabad was liberated from the Nizam, who was being supported by Pakistan, and people were saved from the atrocities inflicted by the Razakars.

Modi played an audio clip of Patel, his voice resonating with emotion: "So, what you have written in the certificate — that whatever I did for states or whatever our govt did for Hyderabad, it was fine — but you know how we handled the Hyderabad case, how difficult it was. We promised all states, all princes, that we will not take any wrong decision for any prince or king. Everyone will be treated equally; whatever happens to every one, they will also be treated the same. But to that extent, for them, we made a separate agreement."

Patel's remarks reflected his resolve to integrate Hyderabad — a princely state that resisted joining India after Aug 15, 1947 — through the operation, a swift military campaign launched on Sept 13, 1948, culminating in the Nizam's surrender on Sept 17.

Operation Polo was necessitated by the Nizam's ambitions for independence and the atrocities of the Razakars, a militia that terrorised Hyderabad's predominantly Hindu population.

Under Patel's leadership, the Army executed the 109-hour operation that ended the Nizam's autocratic rule.

Indians must follow 'vocal for local' mantra, says PM

In his monthly broadcast *Mann Ki Baat*, Modi calls for a self-reliant India, amid trade turmoil due to the U.S. tariffs; expresses anguish at the havoc caused by natural disasters in the country

"Say with pride, this is swadeshi... the only mantra is vocal for local, the only path is Aatmanirbhar Bharat, the only goal is developed India" — Narendra Modi, Prime Minister

ജിതേന്ദ്ര സിങ്ങിനും സോളാർ ദീദിക്കും പ്രധാനമന്ത്രിയുടെ അഭിനന്ദനം

മൻ കി ബാത്ത്

PM Modi lauds Gujarat security guard's way of paying tributes to martyrs

125th episode of monthly radio programme 'Mann Ki Baat'

Also appreciates Bihar's 'Solar Didi' Devki

Bihar's 'Solar Didi' Devki

وزیراعظم مودی کے من کی بات ریڈیو پروگرام کا 125واں شمارہ نشر، پلوامہ میں ڈے نائٹ کرکٹ مقابلہ کی ستائش کی

جموں وکشمیر کی کھیلوں کی تاریخ میں ایک نیا باب درج، قریب 37 سالہ نامساعد حالات کے بعد مثبت تبدیلی نوجوانوں کے مستقبل کی ضمانت

AWAZ THE VOICE

PM Modi highlights J-K's sporting achievements in Mann Ki Baat

ETV भारत

From Mahanadi To Mann Ki Baat, Odisha's Canoeist Rashmita Sahu Rides High Over Waves

Hindustan Times

PM Modi flags growing natural disasters, calls for unity in Mann ki Baat

INDIA TV

'गर्व से कहो ये स्वदेशी है', पीएम मोदी ने 'मन की बात' में वोकल फॉर लोकल का दिया संदेश

The Indian EXPRESS

Mann ki Baat: PM Modi hails security forces during floods, congratulates Khelo India Water Sports Festival winners

खबर fast

बाढ़-बारिश से बड़ा नुकसान, प्राकृतिक आपदाओं से एकजुट होकर लड़ेगा भारत - 'मन की बात' में बोले PM मोदी

livemint

मन की बात में पीएम मोदी ने जम्मू कश्मीर का किया जिक्र, कहा- 'मेरा देश बदल रहा है...' मिले हैं दो खास तोहफे

नवभारत

Mann Ki Baat: 'मन की बात' में पीएम मोदी बोले- अब एक ही मंत्र 'वोकल फॉर लोकल', एक ही रास्ता 'आत्मनिर्भर भारत'

NEWS 24 Think First

Mann Ki Baat: 'My Country Is Changing...' PM Modi Highlights Pulwama Cricket Match And Dal Lake Water Sports Festival

PRAGATIVADI

Mann Ki Baat: PM Modi Highlights Odisha Athlete Rashmita Sahoo's Success, Khelo India Gold Medalists & Encourages Aspiring Sportswomen

THE DAILY Jagran

PM Modi Expresses Concern Over Ongoing Natural Disasters In 'Mann Ki Baat'; Praises Security Forces

THE FEDERAL

Mann ki Baat: Modi pushes Indians to go 'swadeshi' in festive season for self-reliant India

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

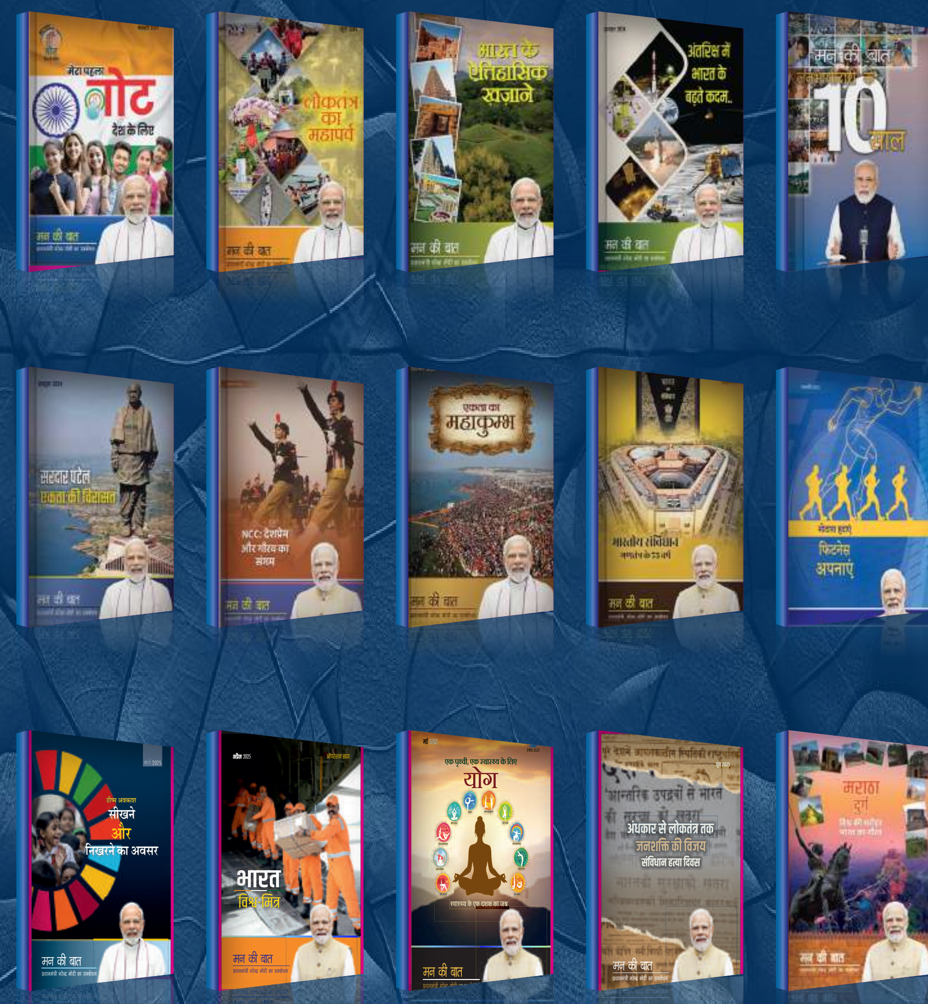

साथियो, 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना, देश की एकता, देश के विकास के लिए बहुत जरूरी है और निश्चित तौर पर खेल इसमें बड़ी भूमिका निभाते हैं और इसलिए ही तो मैं कहता हूँ जो खेलता है, वो खिलता है।

- **माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी**

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार